संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१६
वर्ष : २६ अंक : २
(निरंतर अंक : २८४)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

गुरु - 'गु' माना अंधकार, 'रु' माना प्रकाश। 'शरीर मैं हूँ और संसार का सुख-दुःख सच्चा है' यह अंधकार है। 'मैं सुख-दुःख को जाननेवाला आत्मा हूँ और संसार सपना है, परमात्मा अपना है' - यह गुरुपूनम का संदेश आपको आत्मानुभव में ले जायेगा। थोड़े दिन का खेल है, **सत्य की जय होगी।**

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
२५ अगस्त

गुरुपूर्णिमा पर पूज्य बापूजी के दर्शन के लिए जोधपुर में उमड़ा भक्तों का सैलाब

देश-विदेश में सम्पन्न गुरुपूर्णिमा महोत्सवों में उमड़ा जनसागर

करोल बाग-दिल्ली | नासिक | लखनऊ | रायपुर

ब्रैम्पटन (कनाडा) | न्यूजर्सी (यूएसए) | काठमांडू (नेपाल) | शिकागो (यूएसए)

गाजियाबाद (उ.प्र.) | पटना | कोलकाता | केसरापल्ली (ओड़िशा)

कोटा (राज.) | प्रकाशा (महा.) | जालंधर (पंजाब) | भावनगर (गुज.)

बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.) | कानपुर (उ.प्र.) | इंदौर | हरिद्वार

चंडीगढ़ | भीलवाड़ा (राज.) | सीलमपुर-दिल्ली | राजकोट (गुज.)

जम्मू | आहवा, जि. डांग (गुज.) | राजनांदगाँव (छ.ग.) | बेंगलुरु

अनगुल (ओड़िशा) | तलवाड़ा, जि. होशियारपुर (पंजाब) | कटनी (म.प्र.) | यमुनानगर (हरि.)

गोंडा (उ.प्र.) | बिलासपुर (हि.प्र.) | रुड़की (उत्तराखंड) | टपियाल, जि. साम्बा (जम्मू-कश्मीर)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २६ अंक : २ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २८४)

प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१६

पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

श्रावण-भाद्रपद वि.सं. २०७३

स्वामी : सत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी	सिंधी व सिंधी (देवनागरी)
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०	₹ ३०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५	₹ ५५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५	₹ १२०
आजीवन	₹ ५००	----	₹ २९०

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

रोज सुबह ७-३० व शाम ५-३० बजे

इंटरनेट चैनल
www.ashram.org/live पर उपलब्ध

* 'A2Z न्यूज' चैनल डिश टीवी (चैनल नं. ५७३) पर उपलब्ध है।

* 'न्यूज वर्ल्ड' चैनल मध्य प्रदेश में 'हाथवे' (चैनल नं. २२६), छत्तीसगढ़ में 'ग्रांड' (चैनल नं. ४३) एवं उत्तर प्रदेश में 'नेटविजन' (चैनल नं. २४०) पर उपलब्ध है।

(गतांक से आगे)

बापूजी ने संध्याकाल की महत्ता बताकर संध्या-वंदन करना सिखाया

भारतीय संस्कृति प्राणिमात्र के कल्याण का अटूट खजाना सँजोये हुए है। संध्या-उपासना भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। हमारे ऋषियों ने मानवमात्र के कल्याण के लिए ५ यज्ञ बताये हैं, जिनमें संध्या प्रथम है।

दक्षस्मृति (२.१९) में आता है कि 'संध्या से हीन (संध्या न करनेवाला) मनुष्य नित्य अपवित्र तथा सब शुभ कर्मों के अयोग्य होता है।'

विष्णु पुराण (३.११.१०४) में आता है : 'जो पुरुष प्रातः अथवा सायंकालीन संध्या-उपासना नहीं करते वे दुरात्मा अंधतामिस्र नरक में पड़ते हैं।'

मनुष्य समस्त प्राणियों में सबसे महान माना जाता है क्योंकि उसके पास अधिक विकसित बुद्धि है। इस बुद्धि को आत्मज्ञान या बाहरी सफलता पाने में लगाने हेतु संध्या-वंदन करना अति आवश्यक है। ब्रह्मज्ञानी संत पूज्य बापूजी शास्त्रों में दिये इस गूढ़ रहस्य की महत्ता व आवश्यकता पिछले ५० वर्षों से सत्संगों में बताते आये हैं व संध्या-वंदन करवाते भी रहे हैं। पूज्यश्री के सभी आश्रमों में त्रिकाल संध्या का नियम अनिवार्य है। संध्या-वंदन क्यों करना चाहिए इस बात को पूज्य बापूजी ने शास्त्रीय व वैज्ञानिक - दोनों ढंग से समझाया है। आपश्री कहते हैं : ''संध्या की वेला साधारण घड़ियाँ नहीं हैं। ये मनुष्यों के लिए बड़ी अनर्थकारी हैं। आसुरी शक्तियों का एकदम जोर बढ़ता है। रात्रि को निशाचरों का प्रभाव होता है लेकिन संध्या को जैसे गाड़ी पहले गेयर में ज्यादा जोर से चलती है, जहाज उठता है तो इंजन ज्यादा तेज होता है, ऐसे ही संध्या के समय निशाचर-ऊर्जा का एक झटका लग जाता है। यही कारण है कि संध्या के समय दुर्घटनाएँ ज्यादा होती हैं। आसुरी शक्तियों का बोलबाला होता है।

इस वक्त हमारी आंतरिक अवस्था ऊँची करने में आध्यात्मिकता बड़ी मदद करती है। इस समय की हुई भगवद्-आराधना विशेष लाभ करती है। यह भारतीय संस्कृति की बहुत ऊँची सूझबूझ है कि संध्या के समय धूप किया जाता है और दीया जलाकर उसके आगे बैठ के भगवन्नाम का जप किया जाता है ताकि हानिकारक जीवाणु और आसुरी तरंगें दूर रहें। संध्या के समय आरती होती है और शंख बजाया जाता है। बर्लिन (जर्मनी)

विश्वविद्यालय में अनुसंधान से सिद्ध हुआ कि २७ घन फीट प्रति सेकंड वायुशक्ति से शंख बजाने से २२०० घन फीट वायु के हानिकारक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं और उससे आगे की ४०० घन फीट वायु के हानिकारक जीवाणु मूर्च्छित हो जाते हैं। तो शंखनाद, धूप-दीप और भगवान का जप-ध्यान संध्या की वेला में करना चाहिए। इससे अनर्थ से बचकर सार्थक जीवन, सार्थक शक्ति और सार्थक मति-गति प्राप्त होती है।''

संध्या के समय वर्जित कार्य

संध्या के समय निषिद्ध कर्मों से सावधान करते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''संध्या के समय व्यवहार में चंचल नहीं होना चाहिए, भोजन आदि खानपान नहीं करना चाहिए और संध्या के समय बड़े निर्णय नहीं लेने चाहिए। पठन-पाठन, शयन नहीं करना चाहिए तथा खराब स्थानों में घूमना नहीं चाहिए। संध्या के समय स्नान न करें। स्त्री का सहवास न करें।

संध्याकाल अथवा प्रदोषकाल (सूर्यास्त का समय) में भोजन से शरीर में व्याधियाँ तथा श्मशान आदि खराब स्थानों में घूमने से भय उत्पन्न होता है। दिन में एवं संध्या के समय शयन आयु को क्षीण करता है। पठन-पाठन करने से वैदिक ज्ञान और आयु का नाश होता है। संध्या के समय स्त्री-सहवास करने से आसुरी, कुसंस्कारी अथवा विकलांग संतान उत्पन्न होती है। यदि संतान नहीं हुई तो दम्पती को कोई खतरनाक बीमारी हो जाती है, जिससे वे बेचारे उम्रभर रोते रहते हैं।''

संध्या के समय क्या करें ?

संध्यावंदन की महत्ता बताते हुए पूज्यश्री कहते हैं : ''संध्या के समय ध्यान-भजन करके अपनी सार्थक शक्ति जगानी चाहिए, सत्त्वगुण बढ़ाना चाहिए, दूसरा कोई काम नहीं करना चाहिए। अपने भाग्य की रेखाएँ बदलनी हों, अपनी ७२,००,००,००१ नाड़ियों की शुद्धि करनी हो और अपने मन-बुद्धि को मधुमय करना हो तो १० से १५ मिनट चाहे सुबह की संध्या, दोपहर की संध्या, शाम की संध्या अथवा दोनों, तीनों समय की संध्या विद्युत का कुचालक आसन बिछाकर करें। यदि संध्या का समय बीत जाय तो भी संध्या (ध्यान-भजन) करनी चाहिए, वह भी हितकारी है।''

भारतीय संस्कृति का अनमोल खजाना : त्रिकाल संध्या

त्रिकाल संध्या की महत्ता बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जीवन को यदि तेजस्वी, सफल और उन्नत बनाना हो तो मनुष्य को त्रिकाल संध्या जरूर करनी चाहिए। प्रातःकाल सूर्योदय से दस मिनट पहले से दस मिनट बाद तक, दोपहर को १२ बजे के दस मिनट पहले से दस मिनट बाद तक तथा सायंकाल को सूर्यास्त के दस मिनट पहले से दस मिनट बाद तक - ये समय संधि के होते हैं। इस समय किये हुए प्राणायाम, जप और ध्यान बहुत लाभदायक होते हैं। ये सुषुम्ना के द्वार को खोलने में सहयोगी होते हैं। सुषुम्ना का द्वार खुलते ही मनुष्य की छुपी हुई शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं। जैसे स्वास्थ्य के लिए हम रोज स्नान करते हैं, नींद करते हैं, ऐसे ही मानसिक, बौद्धिक स्वस्थता के लिए संध्या होती है।

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

देशवासियों व सरकार के नाम पूज्य बापूजी का राष्ट्र-हितकारी संदेश

गौपालक और गौप्रेमी धन्य हो जायेंगे... ध्यान दें

गोझरण अर्क बनानेवाली संस्थाएँ एवं जो लोग गोमूत्र से फिनायल व खेतों के लिए जंतुनाशक दवाइयाँ बनाते हैं, वे ८ रुपये प्रति लीटर के मूल्य से गोमूत्र ले जाते हैं। गाय २४ घंटे में ७ लीटर मूत्र देती है तो ५६ रुपये होते हैं। उसके मूत्र से ही उसका खर्चा आराम से चल सकता है। गाय के गोबर, दूध और उसकी उपस्थिति का फायदा देशवासियों को मिलेगा ही।

ऋषिकेश और देहरादून के बीच आम व लीची का बगीचा है। पहले वह १ लाख ३० हजार रुपये में जाता था, बिल्कुल पक्की व सच्ची बात है। उनको गायें रखने की सलाह दी गयी तो वे १५ गायें, जो दूध न देती थीं, लगभग निःशुल्क ले आये। उस बगीचे का ठेका दूसरे साल २ लाख ४० हजार रुपये में गया। उनके अनुसार गायें उस धरती पर घूमने से, गोमूत्र व गोबर के प्रभाव से अब वह बगीचा १० लाख रुपये में जाता है। अपने खेतों में गायों का होना पुण्यदायी, परलोक सुधारनेवाला और यहाँ सुख-समृद्धि देनेवाला साबित होगा।

अगर गोमूत्र, गौ-गोबर का खेत-खलिहान में उपयोग हो जाय तो उनसे उत्पन्न अन्न, फल, सब्जियाँ प्रजा का कितना हित करेंगी, कल्पना नहीं कर सकते ! देशी गाय के दूध, छाछ, झरण, गोबर आदि से अनेक बीमारियों से रक्षा होती है और गौ-चिकित्सा के अंतर्गत इनके प्रयोग से विभिन्न बीमारियाँ मिटायी भी जाती हैं। पंचगव्य से तो कई असाध्य रोग भी मिटाये जाते हैं। गौ-चिकित्सा एवं आयुर्वेदिक, प्राकृतिक आदि चिकित्सा-पद्धतियों को बढ़ावा दिया जाय ताकि विदेशी दवाओं के लिए होनेवाले हजारों करोड़ रुपयों के खर्च और उनके दुष्प्रभावों (साइड इफेक्ट्स) से बचा जा सके।

ऐसे मीडिया की ७-७ पीढ़ियाँ सुखी, समृद्ध व सद्गति को प्राप्त होंगी

प्रजाहितैषी जो सरकारें हैं, उन मेरी प्यारी सरकारों को प्यारभरा प्रस्ताव पहुँचाओगे तो मुझे खुशी होगी। मानव व देश का भला चाहनेवाले प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया इस बात के प्रचार का पुनीत कार्य करेंगे तो मानव के स्वास्थ्य व समृद्धि की रक्षा करने का पुण्य भी मिलेगा, प्रसन्नता भी मिलेगी व भारत देश की सुहानी सेवा करनेवाले मीडिया को देशवासी कितनी ऊँची नजर से देखेंगे और दुआएँ देंगे ! उनकी ७-७ पीढ़ियाँ इस

सेवाकार्य से सुखी, समृद्ध व सद्गति को प्राप्त होंगी।

केमिकल की फिनायल व उसकी दुर्गंध से हवामान दूषित होता है । गौ-फिनायल से आपकी सात्त्विकता, सुवासितता बढ़ेगी ही।

सज्जन सरकारें, प्रजा का हित चाहनेवाली सरकारें मुझे बहुत प्यारी लगती हैं। गौ-गोबर के कंडे से जो धुआँ निकलता है, उससे हानिकारक कीटाणु नष्ट होते हैं। शव के साथ श्मशान तक की यात्रा में मटके में गौ-गोबर के कंडे जलाकर ले जाने की प्रथा के पीछे हमारे दूरद्रष्टा ऋषियों की शव के हानिकारक कीटाणुओं से समाज की सुरक्षा लक्षित है।

अगर गौ-गोबर का १० ग्राम ताजा रस प्रसूतिवाली महिला को देते हैं तो बिना ऑपरेशन के सुखदायी प्रसूति होती है।

गोधरा (गुज.) के प्रसिद्ध तेल-व्यापारी रेवाचंद मगनानी की बहू के लिए गोधरा व बड़ौदा के डॉक्टरों ने कहा था : ''इनका गर्भ टेढ़ा हो गया है । उसीके कारण शरीर ऐसा हो गया है, वैसा हो गया है... सिजेरियन (ऑपरेशन) ही कराना पड़ेगा ।'' आखिर अहमदाबाद गये । वहाँ ५ डॉक्टरों ने मिलकर जाँच की और आग्रह किया कि ''जल्दी सिजेरियन के लिए हस्ताक्षर करो; या तो संतान बचेगी या तो माँ, और यदि संतान बचेगी तो वह अर्धविक्षिप्त होगी। अतः सिजेरियन से एक की जान बचा लो।''

परिवार ने मेरे से सिजेरियन की आज्ञा माँगी। मैंने मना करते हुए गौ-गोबर के रस का प्रयोग बताया। न माँ मरी न संतान मरी और न कोई अर्धविक्षिप्त रहा। प्रत्यक्ष प्रमाण देखना चाहें तो देख सकते हैं। अभी वह लड़की महाविद्यालय में पढ़ती होगी। अच्छे अंक लाती है। माँ भी स्वस्थ है। कई लोग देख के भी आये। कइयों ने उनके अनुभव की विडियो क्लिप भी देखी होगी। गौ-गोबर के रस द्वारा सिजेरियन से बचे हुए कई लोग हैं।

विदेशी जर्सी तथाकथित गायों के दूध आदि से मधुमेह, धमनियों में खून जमना, दिल का दौरा, ऑटिज्म, स्किजोफ्रेनिया (एक प्रकार का मानसिक रोग), मैड काऊ, ब्रुसेलोसिस, मस्तिष्क ज्वर आदि भयंकर बीमारियाँ होने का वैज्ञानिकों द्वारा पर्दाफाश किया गया है। परंतु भारत की देशी गाय के दूध में ऐसे तत्त्व हैं जिनसे एच.आई.वी. संक्रमण, पेप्टिक अल्सर, मोटापा, जोड़ों का दर्द, दमा, स्तन व त्वचा का कैंसर आदि अनेक रोगों से रक्षा होती है। उसमें स्वर्ण-क्षार भी पाये गये हैं। गाय के दूध-घी का पीलापन स्वर्ण-क्षार की पहचान है। लाइलाज व्यक्ति को भी गौ-सान्निध्य व गौसेवा से ६ से १२ महीने में स्वस्थ किया जा सकता है।

पुनः, गोमूत्र, गोबर से निर्मित खाद एवं गौ-उपस्थिति का खेतों में सदुपयोग ! भारत को भूकम्प की आपदाओं से बचाने के लिए मददगार है गौसेवा !

लोग कहते हैं कि 'आप ८००० गायों का पालन-पोषण करते हैं !' तो मैं तुरंत कहता हूँ कि 'वे हमारा पालन-पोषण करती हैं। उन्होंने हमसे नहीं कहा कि हमारा पालन-पोषण करो, हमें सँभालो। हमारी गरज से हम उनकी सेवा करते हैं, सान्निध्य लेते हैं।'

महाभारत (अनुशासन पर्व : ८०.३) में महर्षि वसिष्ठजी कहते हैं : ''गौएँ मेरे आगे रहें। गौएँ मेरे पीछे भी रहें। गौएँ मेरे चारों ओर रहें और मैं गौओं के बीच में निवास करूँ।''

हे साधको ! देशवासियो ! सुज्ञ सरकारो ! इस बात पर आप सकारात्मक ढंग से सोचने की कृपा करें।

आप सभीका स्नेही

आशाराम बापू, जोधपुर

बापूजी की रिहाई के लिए लगातार हो रही है माँग

ऐसे विरले संत बापूजी ही हैं - साध्वी देवा ठाकुर, उपाध्यक्ष , अखिल भारत हिन्दू महासभा

अगर पूरी दुनिया की बात करें तो उसमें एक बड़ा नाम पूज्य संत आशारामजी बापू का है। अगर भारत के संतों में किसीकी पहचान की बात आती है तो बापूजी का नाम प्रथम स्थान पर है। हमारे बापूजी ने असंख्य लोगों को हिन्दू बनाने का काम किया।

बहुत बड़े षड्यंत्र के तहत बापू आज जेल में हैं। ऐसे विरले संत बापूजी ही हैं जिनके भक्तों की ऐसी स्थिति में भी अटूट श्रद्धा है। ऐसे संत के ऐसे शिष्यों को मैं हमेशा हृदय से प्रणाम करती हूँ।

यह देश के लिए बहुत बड़ा दुर्भाग्य है - श्री जुगल किशोरजी, अखिल भारतीय मंत्री, विहिप

बापूजी का देश के लिए बड़ा अमूल्य योगदान है - अनेक स्थानों पर गौशालाएँ, सत्संग, बाल संस्कार केन्द्र तथा वनवासियों, पिछड़ों, गरीबों को सब प्रकार से सहयोग करना और धर्मांतरण को रोकना। इससे ईसाई मिशनरियों को बड़ा झटका लगा और उनके षड्यंत्र के कारण आज संत आशारामजी बापू जेल के अंदर हैं।

देश में जो देशद्रोही प्रवृत्तियाँ हो रही हैं उनको समाप्त किया जाय और उन्हें करनेवाले लोगों को जेलों के अंदर बंद किया जाय लेकिन उसके स्थान पर हमारे संतों को बंद किया जा रहा है। यह देश के लिए एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य है।

जो भी हिन्दू संगठन हैं या देशभक्त हैं उन सबका यह कर्तव्य है कि इस प्रकार की जागृति लायें जिससे समाज, सुसंस्कृति की रक्षा हो सके।

हर हिन्दू का यह कर्तव्य बनता है - श्रीमती उपमा सिंहजी (साध्वी प्रज्ञा सिंह की बड़ी बहन)

माननीय बापूजी एक राष्ट्रीय संत हैं और हिन्दुत्व के लिए सदा से काम करते रहे हैं तो सभी हिन्दुओं का यह कर्तव्य बनता है कि वे बापूजी की रिहाई के लिए प्रार्थना करें और सदैव उनके समर्थन में खड़े रहें।
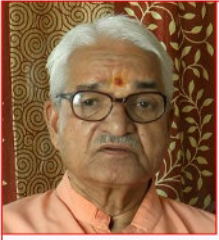
समाज व हिन्दू संस्थाओं को इस षड्यंत्र को समझना चाहिए

- श्री धर्मनारायण शर्माजी अखिल भारतीय मंत्री, विहिप

संत आशारामजी बापू ने धर्मांतरण रोकने के लिए व्यापक स्तर पर साहित्य प्रचारित किया, जगह-जगह धर्मांतरण के विरुद्ध बोले भी इसलिए उन पर घृणित आरोप लगाकर उन्हें आज तक जेल में डाला हुआ है। कुछ षड्यंत्रकारी तत्त्व लगातार एक वायुमंडल बनाये रखना चाहते हैं, जिससे आसानी से बापू की जमानत न हो सके। विधर्मियों के इस षड्यंत्र को आम जनता व हिन्दू संस्थाओं को समझना चाहिए और इन संत की कारावास से मुक्ति के निमित्त देश के अंदर एक आंदोलन खड़ा करने की आवश्यकता है।
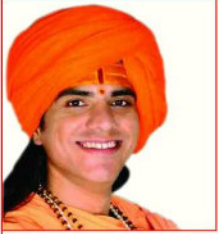
पूरा संत-समाज बापूजी से जुड़ा है - आचार्य बालयोगी गजेन्द्र चैतन्यजी

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दू धर्म को, वैदिक परम्परा को नष्ट करने की एक बहुत बड़ी साजिश चल रही है। जो सनातन, वैदिक परम्परा से जुड़े हैं, उन सब लोगों की आस्था सम्मानित परम पूज्य बापूजी के चरणकमलों में जुड़ी हुई है।

पूरा संत-समाज संत आशारामजी बापू से जुड़ा हुआ है। आज संतों का अवमान हो रहा है। बापूजी पर अभी तक कोई इल्जाम सिद्ध नहीं हुआ है तो उन्हें अंदर रखना यह तो हमारी दृष्टि से अमानवीय है। मैं ऐसी उम्मीद करता हूँ कि कुछ दिन में बापू निश्चित ही निर्दोष बाहर आनेवाले हैं।
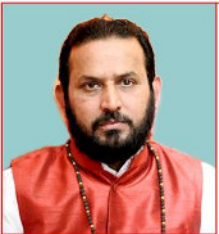
ईसाई मिशनरियाँ बना रही हैं दबाव - श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय अध्यक्षअखिल भारत हिन्दू महासभा

बापूजी बिल्कुल अपराधी नहीं हैं, पूरा केस क्लीयर है लेकिन यह अंतर्राष्ट्रीय साजिश है। ईसाई मिशनरियाँ बापूजी के पीछे लगी हुई हैं, उन्होंने इनको जेल भिजवाया और वे ही ईसाई मिशनरियाँ अब दबाव बना रही हैं कि बापूजी को जमानत न मिले। बापूजी ने हिन्दुत्व के लिए जो किया है और ईसाई मिशनरियों के धर्मांतरण के काम में जो बाधा डाली है उसकी वजह से वे नहीं चाहतीं कि बापूजी बाहर आयें और उस कार्य को दुगनी-चौगुनी रफ्तार से करें।

बापूजी निर्दोष, निरपराध हैं

- महंत श्री राधामोहनदासजी महाराज

संत आशारामजी बापू पर कोई भी आरोप अभी तक सिद्ध नहीं किया जा सका है। वे निर्दोष हैं, निरपराध हैं और इस प्रकार से उन्हें बदनाम किया जाता है तो यह भारतीय संस्कृति के लिए ठीक नहीं है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के लिए अच्छी पहल की है, अच्छे कार्य किये हैं और ऐसे संतों को बदनाम किया जा रहा है तो वह दुर्भाग्यपूर्ण है।

संस्कृतिरक्षकों ने की बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग

पंचम 'अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन' में पधारे

गोवा में १९ से २५ जून तक पंचम 'अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन' सम्पन्न हुआ । इसमें देश के २२ राज्योंसहित नेपाल व श्रीलंका की १६१ से अधिक हिन्दुत्ववादी संस्थाओं-संगठनों के ४०० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया । संत श्री आशारामजी आश्रम की ओर से साध्वी रेखा बहन, साध्वी तरुणा बहन व आश्रम प्रवक्ता नीलम दुबे अधिवेशन में सहभागी हुईं ।

इसमें सनातन संस्कृति की रक्षा करने, संतों के खिलाफ हो रहे षड्यंत्रों के प्रति समाज में जागरूकता लाने, पूज्य बापूजी, साध्वी प्रज्ञा सिंह आदि संतों को त्वरित रिहा किये जाने, सभी हिन्दू संगठनों को एकजुट होकर कार्य करने आदि विषयों पर विचार-विमर्श किया गया ।

अधिवेशन में शामिल हुए संगठनों व संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने पूज्य बापूजी का समर्थन किया । प्रस्तुत हैं कुछ वक्तव्य :

श्री आई.जी. खंडेलवाल, राष्ट्रीय सचिव, हिन्दुस्तान नेशनल पार्टी

आशारामजी बापू हमारे सनातन धर्म के सबसे बड़े संत हैं । वे एक ऐसे संत हैं जिन्होंने करोड़ों लोगों का जीवन बदला है । आज भी बापूजी को जब न्यायालय में लाया जाता है तो लोग सड़क पर दंडवत् प्रणाम करते हैं । यह आस्था ऐसे ही पैदा नहीं होती है । लोगों के जीवन में जब परिवर्तन होता है, तब यह आस्था बनती है ।

महंत श्री इच्छागिरी, सोमवारगिरी मठ, तुलजापुर (महा.)

मैं बापूजी से प्रेरित हुआ हूँ कि एक संत कैसा होना चाहिए । बापूजी के साथ बड़ा घिनौना षड्यंत्र हुआ है जो कि बहुत गलत बात है ।

श्री हरिशंकर जैन, अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय :

मैंने बापूजी के केस की एफआईआर व मेडिकल रिपोर्ट देखी है और जो बयान हुए हैं उनको भी पढ़ा है । केस बिल्कुल बनावटी है, उन्हें फँसाया गया है ।

श्री राहुल कौल, राष्ट्रीय समन्वयक, पनून कश्मीर, पुणे (महा.)

परम पूज्य बापूजी के साथ जो यह आरोप का सिलसिला चल रहा है, इसमें कहीं भी किसी तरह की सच्चाई नहीं है ।

श्री मनीष कुमार वर्मा, अधिवक्ता

आशारामजी बापू का केस पूरी तरह झूठा है और उसमें रत्तीभर भी सच्चाई नहीं है ।

प्रो. कुसुमलता केडिया, भूतपूर्व निदेशक,

गांधी विद्या संस्थान, वाराणसी : बापूजी हिन्दू धर्म की अत्यंत विशिष्ट सेवा बहुत खतरे उठाकर कर रहे हैं ।

अधिवक्ता चेतना शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू स्वाभिमान मंच

संतों पर होनेवाले प्रहार हमारी संस्कृति पर प्रहार हैं । इसके लिए हमें आवाज उठानी चाहिए । हम अपने मंचों से आशारामजी बापू, साध्वी प्रज्ञाजी के लिए लगातार आवाज उठा रहे हैं ।

कर्नल अशोक किनी, अध्यक्ष, फेथ फाउंडेशन, नई दिल्ली

पूज्य आशारामजी बापू के ऊपर जो कार्यवाही अभी कर रहे हैं वह देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। बापूजी को जल्दी से न्याय मिले ऐसी सरकार को व्यवस्था करनी चाहिए।

डॉ. अजय कुमार जयसवाल, भारत विकास परिषद, वाराणसी

बापूजी से जो अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है वह बड़ा ही निंदनीय है।

साध्वी रेखा बहन : संत हैं तो संस्कृति है । यदि बिना किसी ठोस सबूत के संतों को इतना प्रताड़ित किया जायेगा तो मानव-जाति का पतन निश्चित है क्योंकि संत ही संस्कृति के द्वारा मानव-जाति का उत्थान करते हैं, उन्नति करते हैं।

डॉ. माधव भट्टराई, अध्यक्ष, राष्ट्रीय धर्मसभा, काठमांडू (नेपाल)

बापूजी के प्रवचन से हम प्रेरणादायी ऊर्जा प्राप्त करते हैं । धर्म-रक्षा के लिए बापूजी ने जो आजीवन प्रयत्न किया, वह अद्वितीय एवं प्रेरणादायी है। इस उम्र में उनको इतना कष्ट दिया जा रहा है यह देख-सुनकर मुझे बहुत दुःख होता है। मैं सम्बद्ध अधिकारी से अनुरोध करता हूँ कि शीघ्रातिशीघ्र बापूजी को न्याय मिले।

प्रो. रामेश्वर मिश्र पंकज, निदेशक, गांधी विद्या संस्थान, वाराणसी

परम पूज्य आशाराम बापूजी सनातन धर्म और भारतवर्ष के एक अत्यंत पूज्य और श्रेष्ठ मनीषी संत हैं। उनके विरुद्ध चल रहा षड्यंत्र हर तरह से घृणित, निंदनीय और प्रतिकार के योग्य है। बापूजी की छवि तो कोई नष्ट नहीं कर सकता लेकिन जो कुत्सित लोग ऐसा प्रयास कर रहे हैं वे भारतीय संस्कृति के विरोधी हैं, उनको धिक्कार है !

श्री सुभाष चक्रवर्ती, सचिव, निखिल बंग नागरिक संघ, दक्षिण परगना (प. बंगाल)

आशाराम बापूजी को झूठे केस में गिरफ्तार किया गया है। इस केस में कोई प्रमाण नहीं है। इसके विरोध में सारे देश में शांतिपूर्ण आंदोलन होना चाहिए। बापूजी के आश्रम से जनता की, गौमाता की सेवा होती है । विश्वास नहीं होता है तो बापूजी के आश्रम में जा के देखो क्या होता है उधर । बापूजी तो राष्ट्रहितकारी हैं, जनकल्याणकारी हैं। बापूजी को रिहा करना चाहिए।

श्री सुरेश कुलकर्णी, अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, महाराष्ट्र

परम पूज्य आशारामजी बापू को फँसाया गया है । कानून सभीके लिए समान होना चाहिए। कानून हमें जो स्वतंत्रताएँ देता है, वे सारी स्वतंत्रताएँ (तथाकथित) धर्मनिरपेक्ष व अन्य लोगों के लिए हैं और पूज्य संतों के लिए सारे नियम, सारा लॉ (कानून) गलत तरीके से लागू किया जाता है।

पूज्य संतों को यह जो गलत ट्रीटमेंट दी जाती है, इसको मैं धिक्कारता हूँ। एक अधिवक्ता के तौर पर मुझे लगता है कि बापूजी के साथ अन्याय हो रहा है।

साध्वी तरुणा बहन : बड़े दुर्भाग्य की बात है कि जो संत देश का गौरव माने जाते हैं, उन्हीं पर झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं। हमको सावधान होने की जरूरत है।

झूठे अकर्तापन से ज्ञान नहीं होता

एक आदमी ने जूतों की चोरी की। पकड़ा गया। उससे पूछा गया कि ''तुमने जूतों की चोरी की ?''

बोला : ''नहीं, मैंने नहीं की। मेरे पाँवों ने जूते पहन लिये। मैं चोर नहीं हूँ।''

''अच्छा, तुम्हें फाँसी की सजा दी जायेगी।''

बोला कि ''न-न, मैंने जूते चुराये ही नहीं हैं तो सजा क्यों ?''

''अरे भाई ! सजा तुमको नहीं, तुम्हारे गले को दी जा रही है।''

बोला : ''पाँवों ने जूतों की चोरी की तो गले को क्यों सजा दी जा रही है ?''

''अच्छा, गले को सजा नहीं देते, तुम्हारे पाँवों को काट देते हैं।''

बोला कि ''नहीं-नहीं।''

''भाई ! जब तुमने चोरी नहीं की, पाँवों ने चोरी की तो पाँवों को सजा देने में तुमको बुरा क्यों लगता है ?'' इसको कहते हैं अकर्तापन की धज्जियाँ उधेड़ना। इसलिए झूठमूठ अकर्तापने की भावना मत करो क्योंकि अकर्तापन का भाव भी एक मानसिक कर्म है।

अब आप इस बात पर थोड़ा-सा विचार करो कि 'मैं द्रष्टा हूँ' तो कैसे द्रष्टा हो ? 'आँख के द्वारा रूप का द्रष्टा हूँ या अंतःकरण के द्वारा कल्पित पदार्थों का द्रष्टा हूँ।' फिर जब अंतःकरण के साथ आपका संबंध बना ही रहा और उसीमें 'मैं द्रष्टा हूँ' यह दृष्टि भी बनी रही तो आप द्रष्टा कैसे हुए ? अच्छा, आप ईश्वर के द्रष्टा हैं कि नहीं ? दूसरे द्रष्टाओं के द्रष्टा हैं कि नहीं ? अंतःकरणरूपी द्रष्टा के द्रष्टा हैं कि नहीं ? यह द्रष्टापन इतनी उलझनों में बस रहा है कि यदि दूसरे द्रष्टा हैं तो आप सच्चे द्रष्टा नहीं हैं क्योंकि दूसरे द्रष्टा तो दृश्य होते नहीं। यदि आप प्रपंच के द्रष्टा हैं तो अंतःकरण के द्वारा द्रष्टा हैं या बिना अंतःकरण के द्रष्टा हैं ? आप ईश्वर की कल्पना के द्रष्टा हैं या ईश्वर के द्रष्टा हैं ? यह बात बहुत गहरी, ऊँची है, समझने योग्य है। जो लोग पाप-पुण्य करते जाते हैं और कहते जाते हैं कि ''हम कर्ता नहीं हैं, द्रष्टा हैं।'' वे वासना के ही कारण ऐसे काम करते हैं। वासनावान भी कर्ता होता है। जहाँ विरोध है वहाँ भी कर्ता और जहाँ अनुरोध है वहाँ भी कर्ता है। तब क्या करें ?

तो पहली बात यह है कि निकम्मे मत रहो। दूसरी बात, अच्छे काम करो, बुरे काम मत करो। तीसरी बात, अच्छे काम को सकाम मत रखो। चौथी बात, निष्काम कर्म में भी कर्ता मत बनो और पाँचवीं बात यह है कि अकर्तापन में भी जड़ता को मत आने दो।

यह दुनिया जैसी ईश्वर को दिखती है, वैसी ही आपको दिखती है कि नहीं ? यदि ईश्वर की नजर से कुछ अलग आपको दिखता है तो दोनों में से एक नासमझ होगा, चाहे ईश्वर चाहे आप। एक ही चीज को देखना है। उसको ईश्वर दूसरे रूप से देख रहा है और आप दूसरे रूप से। जब ईश्वर की आँख से अपनी आँख मिल जाती है तो सारा भेद मिट जाता है। इसलिए आप ईश्वर की नजर से अपनी नजर मिलाने की कोशिश कीजिये। ईश्वर के साथ मतभेद रखकर आप कभी सुखी नहीं हो सकते। ईश्वर के साथ जिसका कोई मतभेद नहीं है उसीका नाम ब्रह्मज्ञानी है। जब ईश्वर की आँख से आपकी आँख मिल जायेगी तब ईश्वर जैसे सबको अपने स्वरूप से देखता है, वैसे ही (सर्वव्यापक) हरि के सिवाय आपको और कुछ नहीं दिखेगा।

श्रीकृष्ण अवतार का रहस्य

वह सुंदर जहाँ-तहाँ अपना सौंदर्य, वह दयालु जहाँ-तहाँ अपनी दया, वह करुणावरुणालय जहाँ-तहाँ अपनी करुणा फैलाता है, उसीका नाम है कृष्णावतार । भगवान के स्वभाव का अनुसंधान करने से आपको भगवान की करुणा-कृपा, अंतर्यामीपने और प्रेरकपने का चिंतन होगा तथा भगवान की करुणा व उदारता का चिंतन करते रहने से आपके मन में हिम्मत आयेगी।

न्याय तो यमराज के हवाले है। राजा मृदु स्वभाव का होना चाहिए, सिर्फ दंड देनेवाला राजा या भगवान हमें नहीं चाहिए। भगवान की कितनी करुणा व उदारता है ! पूतना, जो अपने स्तनों पर कालकूट जहर लगा के आयी, उसका जहर पिये जा रहे हैं और उसे मुक्ति का दान दे रहे हैं। शकटासुर, अघासुर, बकासुर हो या फिर केशी, जो भी मारने आये उनको सुखी करने के लिए स्वधाम भेज रहे हैं। ये सिर्फ दंड देनेवाले भगवान नहीं हैं, ये तो दया, प्रेम करनेवाले भगवान हैं। युद्ध के मैदान में गीता का ज्ञान देनेवाले भगवान हैं। दैत्यों को, असुरों को दंड देकर भी माधुर्यलोक में भेजनेवाले भगवान हैं।

जो चतुर्भुजी मानते हैं उनको चतुर्भुजी, जो द्विभुजी मानते हैं उन्हें द्विभुजी रूप में दिखते हैं और जो आत्मशांत मौनरूप में मानते हैं उन्हें अपने मौनस्वभाव में आनंदित कर देते हैं।

गीता (७.२५) में भगवान ने कहा : योगमायासमावृतः... उस योगमाया से हमारे भगवान कभी भी कोई भी रूप धारण करने में, कभी भी कोई भी लीला करने में सक्षम हैं, अंतर्धान होने में सक्षम हैं। अंतर्प्रेरणा अंतर्यामी भगवान देते हैं। शुभ करो तो हिम्मत बढ़ाते हैं, आनंद देते हैं; अशुभ करो तो हृदय की धड़कनें बढ़ाते हैं और भीतर-ही-भीतर कुछ लानत बरसाते हैं।

पृथ्वी पर शोषक राजा बढ़ गये, प्रजा त्राहिमाम् पुकारने लगी। दूध, दही, मक्खन, घी पैदा करनेवाले ग्वाल-गोपियाँ और जनसाधारण अपनी मेहनत-मजदूरी के बावजूद भी उन्हें नहीं खा-पी पाते थे, कंस के पहलवानों को देना पड़ता था। अति शोषण हो गया तब वह परात्पर ब्रह्म अष्टमी की मध्यरात्रि को कंस के कारागृह में चतुर्भुजी रूप से प्रकट हुआ और चतुर्भुजी को माँ देवकी व पिता वसुदेव ने प्रार्थना की तो द्विभुजी नन्हे बन गये।

उन नन्हे कृष्ण-कन्हैया को वसुदेवजी टोकरी में लिये जा रहे हैं। यमुनाजी ने देखा, 'अपनी योगमाया से सर्वव्यापक इतना नन्हा बन गया। सर्व में समाया हुआ और विशेष फिर यहाँ नन्हा-मुन्ना कृष्ण होकर पिता की टोकरी में मुझ यमुना से पसार हुए जा रहा है। ऐसे परात्पर ब्रह्म के चरण छूने का मौका मैं क्यों चुकूँगी !' यमुनाजी उछल-कूद मचाती हुई वसुदेव की ठोड़ी तक पहुँच गयीं। वसुदेवजी घबराये। वसुदेवजी की घबराहट और यमुना के प्यार को समझनेवाले उस परात्पर ब्रह्म ने अपने पैर का अँगूठा यमुनाजी को छुआ दिया, यमुनाजी का जल घटा और वसुदेवजी पहुँचे यशोदा के घर।

अपनी योगमाया को वहाँ अवतरित होने का आदेश देनेवाले को वहाँ रखकर योगमाया को टोकरी में ले के आये तो जेल की हथकड़ियाँ फिर लग गयीं। जैसे कृष्ण का अवतार हुआ तो हथकड़ियाँ खुल गयीं और माया का सान्निध्य लिया तो हथकड़ियाँ आ गयीं, यह अवसर

संदेशा देता है कि ऐसे ही जब जीवात्मा भगवान के इस मायावी शरीर में, मायावी संसार में सुख खोजता है तो बंधन की हथकड़ियाँ पड़ जाती हैं और जब इसका आकर्षण छोड़कर कृष्णमय सुख खोजता है तो हथकड़ियाँ खुल जाती हैं।

भगवान का स्वरूप है सत्-चित्-आनंद। सृष्टि का विस्तार सत् अंश से, चित् अंश से ज्ञान का प्रचार-प्रसार, विस्तार व धर्म की रक्षा होती है लेकिन आनंद अंश को विस्तृत होने के लिए भगवान की रासलीला चाहिए। आनंद के बिना जीव चुप नहीं बैठेगा। क्रिया से नृत्य और ध्वनि से गीत उत्पन्न होता है तो क्रिया और ध्वनि के मिश्रण से जो रासलीला हुई वह भगवान के आनंदस्वभाव को प्रकटाती है।

रसो वै सः। इस रासलीला को शास्त्रीय भाषा में भगवान का रस-स्वभाव उद्दीपन करने की लीला भी कहते हैं। रासलीला को नाट्यशास्त्र में हल्लीशक नृत्य कहा है। हल्लीशक नृत्य अर्थात् बीच में नट तो एक हो और इर्द-गिर्द नटियाँ अनेक हों और नट इतनी स्फूर्ति से नृत्य करे कि हर नटी महसूस करे कि नट मेरे साथ ही नृत्य कर रहा है और मेरी ओर ही देख रहा है।

इस रासलीला के तीन पहलू हैं - पहला, एक नट और सैकड़ों नटियाँ, एक साक्षी चैतन्य और सैकड़ों-सैकड़ों वृत्तियाँ। दूसरा, दो गोपियों के बीच नट हो और दोनों गोपियों के कंधे पर नटराज के हाथ, दोनों को कृष्ण अपने लगते हैं। फिर इतना अपनत्व भाव में आ जाते हैं कि वे गोपियाँ महसूस करती हैं 'कृष्ण हमारे हैं।' प्रत्येक गोपी के साथ कृष्ण प्रतीत होते हैं अर्थात् साधना की ऐसी अवस्था होती है कि हजारों-लाखों वृत्तियों को देखनेवाला एक, फिर दो वृत्तियों के बीच द्रष्टा एक, फिर सब वृत्तियों के साथ द्रष्टा का चैतन्य-आनंदस्वरूप एकाकार हो रहा है (यह एकाकार होना रासलीला का तीसरा पहलू है)।

श्रीकृष्ण की लीला सूक्ष्म तत्त्व समझाने के लिए,
अपने आनंदस्वरूप को पाने के लिए है।

कृष्ण खेल रहे हैं। गेंद यमुनाजी में गिर गयी। कृष्ण गेंद लेने कूदे यमुना में। यमुना के गहरे जल में कृष्ण चले जा रहे हैं। वहाँ पहुँचे जहाँ कालिय नाग रहता था और १०१ उसके फन थे। ऐसे ही तुम्हारे हृदयरूपी यमुना के गहरे-गहरे में सौ-सौ विकारी गहरी वासनाओं के फन हैं। कृष्ण ने ॐ की ध्वनि सुनाती हुई बंसी बजायी। उस ध्वनि के नाद से वह सर्प मदोन्मत्त हो गया। वह अपना जहरीला स्वभाव भूलकर मानो बेहोश-सा हो गया। श्रीकृष्ण ने उसके एक-एक फन को अपने पैरों की एड़ी दे मारी और नृत्य किया। बंसी बजती जा रही है, एड़ियाँ ठुकती जा रही हैं, फन छिन्न-भिन्न होते जा रहे हैं और धीरे-धीरे वह कालिय नाग वश हुए जा रहा है।

आश्चर्य यह था कि फन टूट रहे हैं फिर दूसरे बन रहे हैं लेकिन श्रीकृष्ण निराश नहीं होते हैं। वे ॐकार की ध्वनि गुंजाते जाते हैं। ऐसे ही साधक को भी सौ-सौ विकृत वृत्तियों के फन तोड़ते जाना है, फिर वृत्तियाँ उठेंगी तो साधक अपनी साधना का, मंत्र का आश्रय लेता जाय और उन वृत्तियों को दबोचता जाय, खुश रहता जाय तथा मनोमय उत्साह उभारता जाय तो कालिय नागरूपी आसुरी वृत्तियाँ और अहं वश हो जायेगा।

कालिय नाग वश हुआ, मुख्य फन को श्रीकृष्ण ने नाथ दिया, ऐसे ही मुख्य विकारी वृत्ति को जो नाथ देता है, और फन भी उसके अधीन हो जाते हैं। कालिय नाग अधीन हुआ तो उसकी पत्नियाँ भी दासियाँ बन गयीं अर्थात् मुख्य वृत्ति को ज्ञानरूपी साधन से नाथ दो तो और वृत्तियाँ नथने लगती हैं, फिर गौण वृत्तियाँ भी नथने लगती हैं। जैसे श्रीकृष्ण कालिय को नाथने में सफल हुए, ऐसे ही साधक अंतःकरण की गहराई में जाय, जपरूपी बंसी बजाता रहे और मुख्य दोष को नाथ ले, फिर अन्य दोषों को नाथे तो अवांतर दोष नथ जायेंगे और निर्दोष नारायण का आनंदस्वभाव प्रकट हो जायेगा।

पूज्य बापूजी के प्रेरक जीवन-प्रसंग

श्री रामू रावत, जिन्हें सन् १९९८ से पूज्य बापूजी का सान्निध्य प्राप्त होता रहा है, उनके द्वारा बताये गये बापूजी के मधुर प्रसंग :

पेड़ों के प्रति भी कितनी करुणा !

वर्ष २००८-०९ की घटना है । भीलवाड़ा आश्रम (राज.) में बापूजी रुके हुए थे । पूज्यश्री कुटिया से बाहर आये और मुझसे बोले : ''यह जो बड़ा पेड़ है फालतू, पूरी ऊर्जा ले लेता है और इसके कारण पीपल के पेड़ को ठीक से धूप भी नहीं मिलती । इसकी ऊपर से थोड़ी छँटाई कर दे ।''

मैंने छँटाई कर दी । बापूजी प्रसन्न होकर बोले : ''इसके कारण जो पीपल का विकास रुका हुआ था, अब वह हो जायेगा ।''

मैं आने लगा तो पूज्यश्री ने पूछा : ''वैसे यह किस चीज का पेड़ है ?''

''जी, यह सड़क के किनारे फालतू उगकर कचरा करनेवाला पेड़ है । अनुमति हो तो इसको निकालकर दूसरा लगा दें ।''

''चलो, ठीक है ।''

ऐसा बोलकर पूज्यश्री कुटिया में चले गये । मैंने पेड़ की जड़ के आसपास खोद दिया । बापूजी वहाँ से सत्संग के लिए पंडाल की तरफ निकले परंतु कुछ कदम चलकर वापस लौट आये, पेड़ की तरफ देखा, फिर मुझसे बोले : ''तेरे को देखकर यह पेड़ बहुत काँप रहा है ।''

पूज्य बापूजी को मूक पेड़-पौधों की संवेदनाओं का एहसास हो जाता है । कैसी है ब्रह्मज्ञानी महापुरुष की आत्मीयता !

मैं बोला : ''बापूजी ! जब मैं इसकी जड़ के आसपास खोद रहा था तो मुझे ऐसा एहसास हुआ कि यह पेड़ मुझे बार-बार बोल रहा है : मुझे माफ कर दो, माफ कर दो !''

बापूजी एकदम गम्भीर हो गये । पूज्यश्री की आँखों में करुणा के आँसू छलक आये । बड़ी ही करुणा से पेड़ को दोनों हाथों से आशीर्वाद देते हुए बोले : ''रहो, आप इधर ही रहो ।'' फिर मुझे बोले : ''तू एक लोटा जल चढ़ाकर माफी माँग ले !''

कुछ साल बाद जब मेरा दुबारा भीलवाड़ा आश्रम जाना हुआ तो मैंने देखा कि वह पेड़ वैसे-का-वैसा खड़ा था, मानो मुझे मुस्कराते हुए कह रहा था कि 'कीड़ी के पग नेवर बाजे, सो भी साहब सुनत है । बापूजी ने मेरी पुकार सुन ली तो आज भी मैं जीवित हूँ ।' मैंने उसे प्रणाम किया और मन-ही-मन बापूजी को भी प्रणाम किया । वास्तव में, पेड़ों के प्रति भी कितनी करुणा है बापूजी के हृदय में !

बापूजी का अंतर्यामीपना

वर्ष २०११-१२ की बात है । बापूजी का बिलासपुर (हि.प्र.) में सत्संग था । वहाँ पूज्यश्री तो हेलिकॉप्टर से पहुँच गये लेकिन आपश्री के निजी सेवक, जो कार से आ रहे थे, रास्ता भटक गये और रात को भी नहीं पहुँचे ।

सत्संग-पंडाल में बापूजी जब रेलगाड़ी द्वारा दर्शन देते थे तो मेरी वहीं सेवा रहती थी । बापूजी जब टॉफियाँ बाँटते थे तो ट्रेन में नीचे गिरी हुई टॉफियाँ बापूजी को चलने में विक्षेप न पैदा करें इसलिए मैं उन्हें हटाता जाता था और जेब में डाल लेता था । दूसरे दिन मैंने वही कुर्ता पहना था ।

अगले दिन सुबह जब बापूजी घूमने निकले तो साथ में कोई सेवक नहीं था तो मुझे सेवा का मौका मिल गया । घूमते हुए बापूजी जैसे ही आश्रम से थोड़ी दूर पहुँचे तो एक माई पूज्यश्री की आरती उतारने लगी । बापूजी मेरे को बोले : ''तेरी जेब में टॉफियों का प्रसाद है, वह इनको दे ।''

मुझे तो बिल्कुल याद नहीं था कि उस कुर्ते की जेब में प्रसाद की टॉफियाँ हैं । मैंने कहा : ''जी, जेब में नहीं हैं; अभी ले आता हूँ ।''

इतने में बापूजी का निजी सेवक वहाँ पहुँच गया । पूज्यश्री ने उसे प्रसाद लेने भेज दिया । बाद में जब मैं कपड़े धोने लगा तो मैंने देखा कि मेरी जेब में टॉफियाँ हैं । मैं तो आश्चर्यचकित रह गया कि क्या बापूजी का अंतर्यामीपना है ! मेरे कुर्ते की जेब में क्या पड़ा है मुझे पता नहीं, बापूजी को पता है ! पूज्य गुरुदेव के बताने पर मैंने अपनी जेब में हाथ डालकर क्यों नहीं जाँचा इसकी ग्लानि मेरे मन में हुई ।

पूज्य बापूजी सभीको कह रहे हैं कि ''मुझे तुम्हारे भीतर जो दिख रहा है, जरा तुम भी उसे निहार लो ।''

भले हम विस्मृति में खो गये हैं लेकिन यदि गुरु-वचन पर विश्वास रख लें तो स्मृति पुनः प्राप्त होगी । कौन-सी स्मृति ? - 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा ।' (गीता : १८.७३)

संसार-वृक्ष का छेदन करने का एकमात्र उपाय बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण उद्धवजी से कहते हैं : ''हे उद्धव ! भिन्न-भिन्न प्रकार के कोटि साधन करने पर भी सद्गुरु का भजन नहीं किया तो संसार-वृक्ष का छेदन नहीं हो सकता । जैसे शूरों की शक्ति शत्रु का नाश करनेवाली होती है, वैसे ही संसार-वृक्ष का विनाश करनेवाली केवल एक गुरुभक्ति ही है । पापों का नाश करने में जैसे गंगाजल समर्थ है वैसे ही गुरुभक्ति ही संसार-भय को भस्म करती है,

विदेशी भाषा का घातक बोझ सबसे बड़ा दोष है !

(राष्ट्रभाषा दिवस : १४ सितम्बर)

राष्ट्रभाषा हिन्दी ही क्यों ?
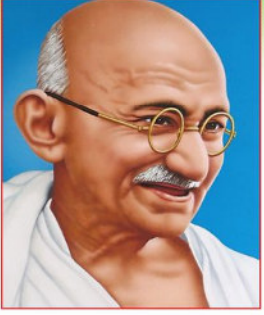
एक प्रांत का दूसरे प्रांत से संबंध जोड़ने के लिए एक सर्वसामान्य भाषा की आवश्यकता है। ऐसी भाषा तो हिन्दी-हिन्दुस्तानी ही हो सकती है।

मराठी, बंगाली, सिंधी और गुजराती लोगों के लिए तो यह बड़ा आसान है, कुछ महीनों में वे हिन्दी पर अच्छा काबू करके राष्ट्रीय कामकाज उसमें चला सकते हैं। मुझे पक्का विश्वास है कि किसी दिन द्राविड़ भाई-बहन गम्भीर भाव से हिन्दी का अभ्यास करने लग जायेंगे। आज अंग्रेजी पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए वे जितनी मेहनत करते हैं, उसका ८वाँ हिस्सा भी हिन्दी सीखने में करें तो बाकी हिन्दुस्तान के जो दरवाजे आज उनके लिए बंद हैं वे खुल जायें और वे इस तरह हमारे साथ एक हो जायें जैसे पहले कभी न थे।

हम किसी भी हालत में प्रांतीय भाषाओं को नुकसान पहुँचाना या मिटाना नहीं चाहते। हमारा मतलब तो सिर्फ यह है कि विभिन्न प्रांतों के पारस्परिक संबंध के लिए हम हिन्दी भाषा सीखें। ऐसा कहने से हिन्दी के प्रति हमारा कोई पक्षपात प्रकट नहीं होता। हिन्दी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं। वह राष्ट्रीय होने के लायक है। वही भाषा राष्ट्रीय बन सकती है जिसे अधिक संख्या में लोग जानते-बोलते हों और जो सीखने में सुगम हो। अंग्रेजी राष्ट्रभाषा कभी नहीं बन सकती।

जितने साल हम अंग्रेजी सीखने में बरबाद करते हैं, उतने महीने भी अगर हम हिन्दुस्तानी सीखने की तकलीफ न उठायें तो सचमुच कहना होगा कि जनसाधारण के प्रति अपने प्रेम की जो डींगें हम हाँका करते हैं वे निरी डींगें ही हैं।

देश के नौजवानों के साथ सबसे बड़ा अन्याय

हमें जो कुछ उच्च शिक्षा अथवा जो भी शिक्षा मिली है वह केवल अंग्रेजी के ही द्वारा न मिली होती तो ऐसी स्वयंसिद्ध बात को दलीलें देकर सिद्ध करने की कोई जरूरत न होती कि 'किसी भी देश के बच्चों को अपनी राष्ट्रीयता टिकाये रखने के लिए नीची या ऊँची सारी शिक्षा उनकी मातृभाषा के जरिये ही मिलनी चाहिए।'

यह स्वयंसिद्ध बात है कि जब तक किसी देश के नौजवान ऐसी भाषा में शिक्षा पाकर उसे पचा न लें जिसे प्रजा समझ सके, तब तक वे अपने देश की जनता के साथ न तो जीता-जागता संबंध पैदा कर सकते हैं और न उसे कायम रख सकते हैं। आज इस देश के हजारों नौजवान एक ऐसी विदेशी भाषा और उसके मुहावरों पर अधिकार पाने में कई साल नष्ट करने को मजबूर किये जाते हैं जो उनके दैनिक जीवन के लिए बिल्कुल बेकार है और जिसे सीखने में उन्हें अपनी मातृभाषा या उसके साहित्य की उपेक्षा करनी पड़ती है। इससे होनेवाली राष्ट्र की अपार हानि का अंदाजा कौन लगा सकता है ? इससे बढ़कर कोई वहम कभी था ही नहीं कि अमुक भाषा का विकास हो

ही नहीं सकता या उसके द्वारा गूढ़ अथवा वैज्ञानिक विचार समझाये ही नहीं जा सकते । भाषा तो अपने बोलनेवालों के चरित्र और विकास का सच्चा प्रतिबिम्ब है ।

अंग्रेजी भाषा के दुष्परिणाम

विदेशी शासन के अनेक दोषों में देश के नौजवानों पर डाला गया विदेशी भाषा के माध्यम का घातक बोझ इतिहास में एक सबसे बड़ा दोष माना जायेगा । इस माध्यम ने राष्ट्र की शक्ति हर ली है, विद्यार्थियों की आयु घटा दी है, उन्हें आम जनता से दूर कर दिया है और शिक्षण को बिना कारण खर्चीला बना दिया है । अगर यह प्रक्रिया अब भी जारी रही तो वह राष्ट्र की आत्मा को नष्ट कर देगी । इसलिए शिक्षित भारतीय जितनी जल्दी विदेशी माध्यम के भयंकर वशीकरण से बाहर निकल जायें उतना ही उनका और जनता का लाभ होगा ।

इसे सहन नहीं किया जा सकता

अंग्रेजी के ज्ञान के बिना ही भारतीय मस्तिष्क का उच्च-से-उच्च विकास सम्भव होना चाहिए । हमारे लड़कों और लड़कियों को यह सोचने का प्रोत्साहन देना कि 'अंग्रेजी जाने बिना उत्तम समाज में प्रवेश करना असम्भव है' - यह भारत के पुरुष-समाज और खास तौर पर नारी-समाज के प्रति हिंसा करना है । यह विचार इतना अपमानजनक है कि इसे सहन नहीं किया जा सकता । इसलिए उचित और सम्भव तो यही है कि प्रत्येक प्रांत में उस प्रांत की भाषा का और सारे देश के पारस्परिक व्यवहार के लिए हिन्दी का उपयोग हो । हिन्दी बोलनेवालों की संख्या करोड़ों की रहेगी किंतु (ठीक ढंग से) अंग्रेजी बोलनेवालों की संख्या कुछ लाख से आगे कभी नहीं बढ़ सकेगी । इसका प्रयत्न भी करना जनता के साथ अन्याय करना होगा ।

पहली और बड़ी-से-बड़ी समाज-सेवा

अंग्रेजी के ज्ञान की आवश्यकता के विश्वास ने हमें गुलाम बना दिया है । उसने हमें सच्ची देशसेवा करने में असमर्थ बना दिया है । अगर आदत ने हमें अंधा न बना दिया होता तो हम यह देखे बिना न रहते कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण आम जनता से हमारा संबंध टूट गया है, राष्ट्र का उत्तम मानस उपयुक्त भाषा के अभाव में अप्रकाशित रह जाता है और आधुनिक शिक्षा से हमें जो नये-नये विचार प्राप्त हुए हैं उनका लाभ सामान्य लोगों को नहीं मिलता । पिछले ६० वर्षों से हमारी सारी शक्ति ज्ञानोपार्जन के बजाय अपरिचित शब्द और उनके उच्चारण सीखने में खर्च हो रही है । हमारी पहली और बड़ी-से-बड़ी समाजसेवा यह होगी कि हम अपनी प्रांतीय भाषाओं का उपयोग शुरू करें तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसका स्वाभाविक स्थान दें ।

शुभ संकल्पों के आदान-प्रदान का दिन : रक्षाबंधन

जैसे भगवान भाव के भूखे हैं, ऐसे ही बहन भी भाई के लिए उत्तम भाव करती है तो भाई के हृदय में भी बहन के लिए उत्तम भाव पैदा होते हैं । तो भाव को अभिव्यक्त करने के लिए साड़ी है तो साड़ी, बर्तन है तो बर्तन या और कोई चीज भाई बहन को देता है । प्रेम में पदार्थ तुच्छ हो जाते हैं, वस्तुएँ छोटी हो जाती हैं । और भारतीय संस्कृति का यह दृष्टिकोण रहा है कि प्रेम लेना नहीं जानता, प्रेम प्रेमास्पद को देकर उसके सुख में अपने सुख का एहसास करता है । बहन का भाई के प्रति शुद्ध, पवित्र प्रेम है तो भाई को और कुछ नहीं तो शुभ संकल्पयुक्त सूती धागा बाँधती है । प्रेम इतना संवेदनशील है, इतना अद्‌भुत, इतना सच्चा है कि भाई के हृदय में भी आंदोलन पैदा कर देता है और वह भी कुछ-न-कुछ दिये बिना रहता नहीं है ।

उसको नमस्कार !

है उस महान को नमस्कार ।।
जो केवल परमानंद रूप,
है जिसका कण-कण में निवास ।
उसको ही सब जग रहा खोज,
जिसका यह जगमय चिद्विलास ।
उस शक्तिमान को नमस्कार ।।
जिसकी विभुता इतनी विशाल,
बसता है उसमें शून्य व्योम ।
जिसमें रहते पृथ्वी सागर,
जिसमें चलते हैं सूर्य सोम ।
उस प्रकृति प्राण को नमस्कार ।।
जो एक प्रेम के भाववश्य,
पाते जिसको प्रेमी प्रवीण ।
आते रहते जिसके सम्मुख,
नीचातिनीच दीनातिदीन ।
उस दयावान को नमस्कार ।।
जिसको कहते हैं दीनबंधु,
जो दुखियों की सुनता पुकार ।
जिसकी महिमा अतुलित अनंत,
जिसका चहुँदिशि से खुला द्वार ।
उस गुणनिधान को नमस्कार ।।
जिसकी इतनी है सरल प्राप्ति,
मिल सकते हैं जो सभी ठाम१ ।
भक्तों के ही भावानुसार,
दर्शन देते आनंदधाम ।
उसके विधान को नमस्कार ।।
जो जीवन का निर्मल प्रकाश,
मिटती है जिससे भूल भ्रांति ।
गल जाता है देहाभिमान,
मिलती है पावन परम शांति ।
उस दिव्य ज्ञान को नमस्कार ।।
जिस बल से वह अज्ञेय तत्त्व,
अनुभव होता यद्यपि अरूप ।
जिस बल से वह चिन्मय अचिंत्य,
चिंतन में आता निज स्वरूप ।
उस सतत ध्यान को नमस्कार ।।
बढ़ती जिससे अनुरक्ति भक्ति,
होता जिससे परमानुराग ।
ऐसा जिसका सुंदर प्रभाव,
हो जाये पथिक में मोह त्याग ।
उस सत्य गान को नमस्कार ।।

– संत पथिकजी

१. जगह

साँईं श्री लीलाशाहजी की अमृतवाणी

✻ जो सुहावने पदार्थ हैं उनके मिलने से सुख तथा भद्दे पदार्थ के मिलने से दुःख होगा और जब तक यह शरीर रहेगा, तब तक सुख-दुःख, हानि-लाभ, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान होते रहेंगे। ये सुख-दुःख तो आते और जाते रहेंगे। कभी कम तो कभी अधिक होते रहेंगे और आप ? आप तो आत्मा होने से अविनाशी हैं, नष्ट नहीं होते। ये दुःख-सुख आने-जानेवाले हैं, उन्हें सहन कीजिये। अपना कर्तव्य-पालन कीजिये। जो कर्तव्य का पालन करता है, वह ठीक है, श्रेष्ठ है।

✻ मन, बुद्धि एवं इन्द्रियों को वश में रखो। भाई ! क्रोध आदि से ऊपर उठो, तब तुम्हें बोध (ज्ञान) होगा, तत्त्व का ज्ञान होगा। यह (शरीर) दुर्ग है दुर्ग ! उसके भीतर जो विकार बैठे हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह - वे आवरण करते हैं। दर्पण के ऊपर पर्दा होगा तो उसमें मुख देख न सकोगे। जैसे धुआँ अग्नि को ढक लेता है, वैसे वह आवरण अंतःकरण को आच्छादित करता है।

घर-परिवार को कैसे रखें खुशहाल ?

आजकल की महिलाएँ झगड़े के पिक्चर, नाटक देखती-सुनती हैं, गाने गाती हैं : 'इक दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा' तथा भोजन भी बनाती जाती हैं।

अब जिसके दिल के ही टुकड़े हजार हुए, उसके हाथ की रोटी खानेवाले का तो सत्यानाश हो जायेगा । इसलिए भगवन्नाम या गुरुमंत्र का जप, भगवद्-सुमिरन करते हुए अथवा भगवन्नाम-कीर्तन सुनते हुए भोजन बनाइये और कहिये 'नारायण नारायण नारायण...'

दूसरी बात, कई माइयाँ कुटुम्बियों को भोजन भी परोसेंगी और फरियाद भी करेंगी, उनको चिंता-तनाव भी देंगी। एक तो वैसे ही संसार में चिंता-तनाव काफी है। उन बेचारियों को पता भी नहीं होता है कि हम अपने स्नेहियों को, अपने पति, पुत्र, परिवारवालों को भोजन के साथ जहर दे रही हैं।

''बाबाजी ! जहर हम दे रही हैं ?''

हाँ, कई बार देती हैं देवियाँ। भोजन परोसा, बताया कि 'बिजली का बिल ६००० रुपये आया है।'

अब उसकी १८००० रुपये की तो नौकरी है, ६००० रुपये सुनकर मन चिंतित होने से उसके लिए भोजन जहर हो गया। 'लड़का स्कूल नहीं गया, आम लाये थे वे खट्टे हैं, पड़ोस की माई ने ऐसा कह दिया है...' - इस प्रकार यदि महिलाएँ भोजन परोसते समय अपने कुटुम्बियों को समस्या और तनाव की बातें सुनाती हैं तो वह जहर परोसने का काम हो जाता है।

अतः दूसरी कृपा अपने कुटुम्बियों पर कीजिये कि जब वे भोजन करने बैठें तो कितनी भी समस्या, मुसीबत की बात हो पर भोजन के समय उनको तनाव-चिंता न हो। यदि चिंतित हों तो उस समय भोजन न परोसिये, २ मीठी बातें करके 'नारायण नारायण नारायण... यह भी गुजर जायेगा, फिक्र किस बात की करते हो ? जो होगा देखा जायेगा, अभी तो मौज से खाइये पतिदेव, पुत्र, भैया, काका, मामा !...' जो भी हों। तो माताओं-बहनों को यह सद्गुण बढ़ाना चाहिए।

भोजन करने के १० मिनट पहले से १० मिनट बाद तक व्यक्ति को खुशदिल, प्रसन्न रहना चाहिए ताकि भोजन का रस भी पवित्र, सात्त्विक और खुशी देनेवाला बने। भोजन का रस अगर चिंता और तनाव देनेवाला बनेगा तो वह जहर हो जायेगा, मधुमेह पैदा कर देगा, निम्न या उच्च रक्तचाप पैदा कर देगा, हृदयाघात का खतरा पैदा कर देगा । इसलिए भोजन करने के पहले, भोजन बनाने के पहले तथा भोजन परोसते समय भी प्रसन्न रहना चाहिए और कम-से-कम ४ बार नर-नारी के अंतरात्मा 'नारायण' का उच्चारण करना चाहिए।

भाइयों को भी एक काम करना चाहिए। रात को सोते समय जो व्यक्ति चिंता लेकर सोता है वह जल्दी बूढ़ा हो जाता है। जो थकान लेकर सोता है वह चाहे ८ घंटे बिस्तर पर पड़ा रहे फिर भी उसके मन की थकान नहीं मिटती, बल्कि अचेतन मन में घुसती है। इसलिए रात को सोते समय कभी भी थकान का भाव अथवा चिंता को साथ में लेकर मत सोइये। जैसे भोजन के पहले हाथ, पैर और मुँह गीला करके भोजन करते हैं तो आयुष्य बढ़ता है और भोजन ठीक से पचता है, ऐसे ही रात को सोते समय भी अपना चित्त निश्चिंतता से, प्रसन्नता से थकानरहित हो जाय ऐसा चिंतन करके फिर 'नारायण नारायण...' जप करते-करते सोइये तो आपके वे ६ घंटे नींद के भी हो जायेंगे और भक्ति में भी गिने जायेंगे। तुम्हारा भी मंगल होगा, तुम्हारे पितरों की भी सद्गति हो जायेगी और संतानों का भी कल्याण होगा।

जो सादगी, सच्चाई, संयम से जीता है उसका मनोबल बढ़ता है और आभा भी बढ़ती है, दिव्य हो जाती है। आजकल सिनेमा, अश्लील वेबसाइटें, भड़कीले वस्त्र-परिधान और उच्छृंखल व्यवहार ने विद्यार्थियों के जीवन को खोखला बना दिया है । जैसा संग मिलता है मन वैसा ही सच्चा मानने लग जाता है क्योंकि हम लोग आत्मज्ञान के रास्ते पर तो चले नहीं हैं, सच्चिदानंद साक्षी आत्मा में तो टिके नहीं हैं कि जीवन अडिग हो । इसलिए कुसंग मिलता है तो कुसंग में बह जाते हैं और आकर्षण होता है तो उसमें बह जाते हैं । कभी सत्संग मिलता है तो थोड़ा चढ़ते हैं। इसलिए गुरुमंत्र, सत्साहित्य साथ में हो, हररोज घर बैठे थोड़ा सत्संग हो, जप-तप हो तो पुण्यमयी समझ आती है।

'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक देश के हर युवक-युवती को अवश्य पढ़नी चाहिए। उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़नी चाहिए जिनसे जीवन में धैर्य, शांति, मिलनसार स्वभाव, कार्य में तत्परता, ईमानदारी, निर्भयता और आध्यात्मिक तेज बढ़े। भगवद्गीता, राम गीता, अष्टावक्र गीता आदि कई गीताएँ हैं, इनमें सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है भगवद्गीता लेकिन तत्त्वज्ञान में शक्तिशाली है अष्टावक्र गीता। यह छोटी-सी ही है पर एकदम ऊँची बात कहती है। उसका अनुवाद किया भोला बाबा ने और उसे 'वेदांत छंदावली' ग्रंथ में छपवाया। उसमें से जितना अष्टावक्रजी का उपदेश है उतना हिस्सा लेकर अपने आश्रम ने छोटा-सा ग्रंथ प्रकाशित किया और 'श्री ब्रह्मरामायण' नाम दिया। इसे पढ़ने से आदमी का मन तुरंत ऊँचे विचारों में रमण करने लगता है, खिलने लगता है। ऐसे दोहे, छंद, श्लोक, भजन याद होने चाहिए, ऐसे विचार स्मरण में आते रहने चाहिए। इधर-उधर जब चुप बैठें तो उन्हीं पवित्र व ऊँचे विचारों में मन चला जाय। ऐसा नहीं कि 'मेरे दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा।'

क्या अर्थ ? कोई अर्थ नहीं। कोई कारण ? कोई कारण नहीं। विकार पैदा हों ऐसे गीत याद न रखो। ओज-बल, ज्ञान, साहस, धैर्य के विचार तुम्हारे अंदर पोषित हों, छलकें ऐसे भजन, ऐसे दोहे दुहराने चाहिए। ऐसे चित्र देखने चाहिए जिनसे विकार आते हों तो शांत हो जायें। ऐसा नहीं कि ऐसे चित्र देखो, ऐसे कपड़े पहनो कि विकार आने लगें। विकार तो शरीर को नोच लेते हैं। यह सब (अश्लीलता, फैशन) विदेशियों की देन है।

भारतीयों में भय घुस गया है। भयभीत आदमी सब हलके काम करता है। भयभीत आदमी झूठ बोलता है। आदमी भयभीत हो जाता है तो सही निर्णय नहीं ले सकता। जीवन में जितनी-जितनी भीतर से निर्भीकता आती है उतनी-उतनी कार्य में सफलता मिलती है। अतः निर्भीक रहना चाहिए, उद्यमी रहना चाहिए, सम और सहनशील रहना चाहिए।
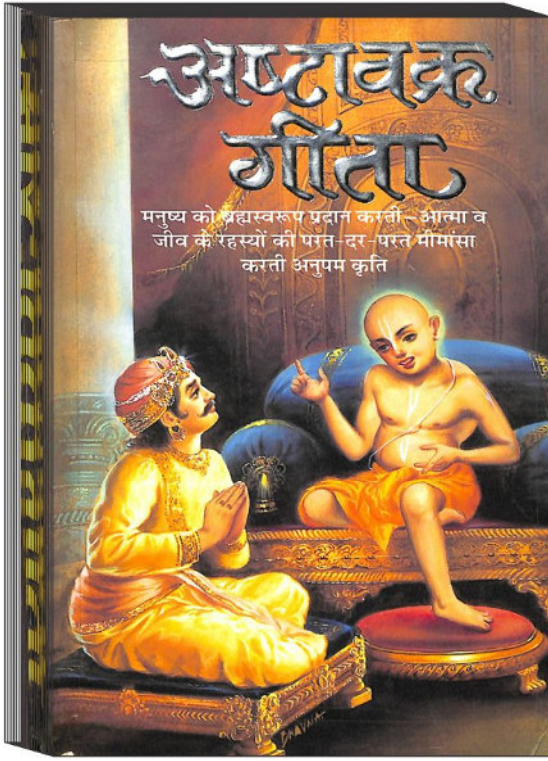
अष्टावक्र गीता

मंगलाचरण

मनुष्य-जीवन का मुख्य उद्देश्य है आत्मसाक्षात्कार अर्थात् अपने वास्तविक स्वरूप आत्मा-परमात्मा को जान लेना । इसके लिए जिज्ञासु व तत्पर साधकों को ब्रह्मस्वभाव में स्थित होना अनिवार्य है । इसी ब्रह्मस्वभाव का सत्य महामुनि अष्टावक्रजी महाराज ने राजा जनक को सुनाया-समझाया, जो 'अष्टावक्र गीता' के नाम से प्रसिद्ध है । यह ग्रंथ योगवासिष्ठ महारामायण, अवधूत गीता आदि वेदांत ग्रंथों की श्रृंखला में आता है । इसे 'अष्टावक्र संहिता' भी कहा जाता है।

इस ग्रंथ को क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। इसे तीन खंडों में विभाजित किया गया है। प्रथम खंड में महामुनि अष्टावक्रजी के जीवन-संबंधित कथा-प्रसंगों का वर्णन है । द्वितीय खंड में जिज्ञासुओं के लिए सम्पूर्ण अष्टावक्र गीता श्लोक व अर्थसहित प्रस्तुत की गयी है। तृतीय खंड में पूज्य बापूजी ने अष्टावक्र गीता के जिन श्लोकों का अर्थ एवं रहस्य अपनी सहज, सरल, सारगर्भित व आत्मानुभूति से सम्पन्न अमृतवाणी में समझाया है, उन्हें संकलित किया गया है। हमें विश्वास है कि इसका अध्ययन, मनन व चिंतन जिज्ञासु-जनों को मोक्षमार्ग में विहंग गति से आत्मलाभ पाने में निश्चित सहायक सिद्ध होगा।

अष्टावक्र गीता का ज्ञान सनातन संस्कृति की ऐसी अनमोल धरोहर है जो जीवन का सत्य, जो कि परमानंदस्वरूप है, शांतस्वरूप है, वह मानवमात्र को उसीके पास... नहीं-नहीं, वह स्वयं है यह बता देती है। ऐसे संस्कार हर उम्र के, हर मत-पंथ के, जाति-धर्म के मनुष्य का परम हित करनेवाले हैं। ये बचपन में या गर्भावस्था में मिलें तो और भी सरलता से आत्मसात् होकर कल्याण करेंगे। अतः गर्भिणी स्त्रियों को, माताओं-बहनों को इसके श्लोकों का अथवा इसीके भावानुवादस्वरूप बनी आश्रम की पुस्तिका 'श्री ब्रह्मरामायण' का पठन, चिंतन, श्रवण एवं गायन करते रहना चाहिए।

मोक्षमार्गी साधकों के लिए अमृत

अष्टावक्र गीता की महिमा बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''अष्टावक्रजी जैसा सद्गुरु हो और जनक जैसा सत्शिष्य हो तो उपदेशमात्र से (आत्मसाक्षात्कार की) घटना घट जाती है। जिसकी समझने की योग्यता खिली नहीं है उसे साधना करनी पड़ती है। जिसकी योग्यता खिल गयी है उसको उपदेशमात्रेण... श्रवणमात्रेण... जरा-सा गुरु का उपदेश ब्रह्मभाव में दृढ़ कर देता है। १२ वर्ष के अष्टावक्रजी को गुरुपद पर आसीन करके राजा जनक ने उनसे आत्मज्ञान का जो उपदेश प्राप्त किया वही 'अष्टावक्र गीता' के रूप में हमें प्राप्त है, जो मोक्षमार्गी साधकों के लिए अमृत समान है।''

यह ग्रंथ अमोघ रामबाण

श्री अखंडानंद सरस्वतीजी अपने साधनाकाल में अष्टावक्र गीता का अध्ययन किया करते थे। वे कहते थे : ''जब वेदांत में मुझे रुचि हुई तो अष्टावक्र गीता ने मुझे विशेषरूप से आकृष्ट किया। वह इतनी सरल, इतनी ललित है कि

बोल-बोलकर श्लोक पढ़ने में आनंद आता था। अष्टावक्र गीता जिज्ञासु के हृदय को तत्क्षण प्रकाशित कर देती है और विशुद्ध अनुभव-रस को अपने स्वरूप के रूप में ही निरावरण कर देती है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि जो जिज्ञासु युक्ति-जाल से, खंडन-मंडन से एवं वागाडम्बर से बचकर सरल हृदय से ब्रह्म, आत्मा की सिद्ध एकता का अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए यह ग्रंथ अमोघ रामबाण के समान है और निश्चित रूप से परम पद की प्राप्ति के योग्य बनानेवाला है।''

श्री रामकृष्ण परमहंसजी ने विवेकानंदजी को ज्ञानमार्ग का उत्तम अधिकारी जानकर सर्वप्रथम अष्टावक्र गीता पढ़ने को दी थी।

प्रथम खंड : जीवन-प्रसंग

महामुनि अष्टावक्रजी के जन्म का वृत्तांत

महाभारत के वन पर्व में महामुनि अष्टावक्रजी के जन्म का वृत्तांत और राजा जनक के दरबार में जाने की कथा आती है।

महर्षि लोमशजी युधिष्ठिर से कहते हैं : ''कहोड मुनि के पुत्र अष्टावक्रजी और उद्दालकनंदन श्वेतकेतु - ये दोनों महर्षि समस्त भूमंडल के वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ थे। एक समय वे दोनों मामा-भानजे विदेहराज के यज्ञमंडप में गये (श्वेतकेतु मामा थे)। दोनों ही ब्राह्मण अनुपम विद्वान थे। वहाँ शास्त्रार्थ होने पर उन दोनों ने अपने विपक्षी बंदी (वरुणदेव का पुत्र) को जीत लिया।''

युधिष्ठिर ने पूछा : ''लोमशजी ! उन ब्रह्मर्षि का कैसा प्रभाव था, जिन्होंने बंदी जैसे सुप्रसिद्ध विद्वान को भी जीत लिया ? वे किस कारण अष्टावक्र (आठों अंगों से टेढ़े-मेढ़े) हो गये, ये सब बातें मुझे यथार्थ रूप से बताइये।''

लोमशजी ने कहा : ''राजा जनक के समय में उद्दालक ऋषि हो गये। उनके शिष्य थे कहोड मुनि। संसार में उन्हें आसक्ति नहीं थी। उद्दालक ऋषि से उन्होंने वेदों का ज्ञान प्राप्त किया था। वे प्रायः वेदों के अध्ययन-अध्यापन व चिंतन-मनन में ही निमग्न रहते थे।

कहोड मुनि का सदाचरण देखकर उद्दालक ऋषि को हुआ कि 'मैं अपनी पुत्री का हाथ अपने इस सत्‌शिष्य के हाथ में सौंप दूँ।' और उन्होंने अपनी पुत्री सुजाता की शादी कहोड मुनि के साथ कर दी। कहोड मुनि हमेशा की तरह वेदाध्ययन-अध्यापन करते और पत्नी को भी वेदों की ऋचाएँ सुनाते। समय बीतता गया। पत्नी गर्भवती हुई। एक बार कहोड मुनि अपने शिष्यों को वेद की ऋचाएँ सुना रहे थे, तभी माँ के गर्भ में पल रहा बालक बोल उठा :

''ऋषिवर ! आप वेद की जिन ऋचाओं का पाठ कर रहे हैं उनमें गलतियाँ हो रही हैं, आपका उच्चारण शुद्धतापूर्वक नहीं हो रहा है। मैंने गर्भ में ही वेदों के सभी अंगों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। रोज-रोज पाठमात्र से क्या लाभ ? वे तो शब्दमात्र हैं। शब्दों में ज्ञान कहाँ ? स्वयं की अनुभूति ही सत्य है।''

भावार्थ यह है कि शास्त्रों के केवल पठन-पाठन से पांडित्य आ सकता है, आत्मतत्त्व की अनुभूति नहीं हो सकती।

शिष्यों के बीच बैठे हुए कहोड मुनि को ये उलाहनेभरे वचन आश्चर्य और अपमानकारक लगे कि 'गर्भ में से यह मेरा पुत्र बोल रहा है ! अभी तो माँ के उदर में रहते इसको आठ महीने हुए हैं और मेरे लिए ऐसी टेढ़ी बातें बोलता है ! मेरी गलतियाँ बताता है !'

उन्होंने क्रुद्ध होकर पुत्र को शाप दे दिया : ''जा, तेरे शरीर में आठ अंग टेढ़े होंगे !''

कहोड मुनि वेद की ऋचाओं का पठन-पाठन करते-कराते थे लेकिन उनका मन अभी अपने स्वरूप में स्थित नहीं हुआ था इसलिए अपनी गलती दिखायी जाने पर उनके अहं को ठेस पहुँची और उन्होंने उदरस्थ शिशु को शाप दे दिया।

उस शाप के अनुसार वे महर्षि आठ अंगों से टेढ़े पैदा हुए। इसलिए 'अष्टावक्र' नाम से उनकी प्रसिद्धि हुई।''

(क्रमशः)

श्रीमद्भगवद्गीता

एक परिचय

- पूज्य बापूजी

परमात्मा अनादि और अनंत हैं। सनातन धर्म के ऋषि-मुनियों ने वेदों, उपनिषदों और पुराणों में उन अनादि-अनंत परमात्मा के ज्ञान का, उनके स्वरूप का और उनकी लीलाओं का विस्तार से वर्णन किया है। आर्षद्रष्टा भगवान वेदव्यासजी ने अपने ग्रंथों में सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ 'महाभारत' की रचना की, जिसे 'पंचम वेद' कहा जाता है। उसमें तरह-तरह के उपदेश दिये गये हैं। उनका सारभूत रहस्य जिस ग्रंथ में दिया गया है वह है 'श्रीमद्भगवद्गीता'। समग्र महाभारत का नवनीत इसमें है।

'श्रीमद्भगवद्गीता' के १८ अध्याय हैं और उनमें कुल ७०० श्लोक हैं। इसमें पहला अध्याय है :

अर्जुन-विषादयोग

अर्जुन ने महाभारत के युद्ध के मैदान में जब अपने सगे-संबंधियों को देखा तो 'उनके साथ युद्ध करना पड़ेगा और युद्ध में वे मारे जायेंगे' - ऐसा सोचकर वह खिन्न हो गया। उसका मन विषाद से इतना भर गया कि वह धनुष-बाण छोड़कर रथ पर बैठ गया।

अर्जुन विषाद कर रहा है लेकिन भगवान के समक्ष अपनी व्यथा प्रकट करता है। है तो विषाद लेकिन ईश्वर के करीब हो रहा है तो वह 'विषादयोग' बन जाता है। आपके जीवन में भी कभी-कभार उतार-चढ़ाव आयें तो पूजा के कमरे में चले जाना और उससे कह देना कि 'नाथ ! हमारी यह समस्या है, हमारे मन की दशा ऐसी है, हमारी बुद्धि में राग-द्वेष और चित्त में चंचलता भरी है। शरीर में रोग-बीमारियाँ आती-जाती हैं लेकिन हे नाथ ! हम जैसे-तैसे हैं, आपके हैं। हम चलेंगे हमारी मति-गति से लेकिन उठानेवाले हाथ आपके करुणा-कृपा के। हमें अपने बल पर इतना भरोसा नहीं जितना आपकी उदारता, करुणा और कृपा पर भरोसा है प्रभु !

हमारे चित्त के दोष हम निवृत्त नहीं कर पाते, हमारी मति की राग-द्वेषमयी धारा को हम नहीं बदल पाते। हमारी राग-द्वेषमयी धारा को आप अपने सत्संग, सुमिरन के राग का दान देकर अपनी ओर मोड़ दीजिये।

बंधन और दुःख सत्य नहीं हैं। जब मन के साथ हम जुड़ते हैं तो बंधन व दुःख सत्य भासते हैं। पाप-पुण्य सत्य नहीं हैं लेकिन कर्ताभाव से जब करते हैं तो सत्य हो जाते हैं। हे परमेश्वर ! हमारे बंधन, पाप, दुःख इन मिथ्या धाराओं से जुड़ने के कारण बढ़ गये। अब हम आपसे जुड़ना चाहते हैं। वास्तव में हम आपसे विलग (अलग) नहीं हो सकते हैं लेकिन अभागे अज्ञान ने हमें आपसे विलग दिखाया है। हम आपकी शरण हैं।' - इस प्रकार की प्रार्थना समस्त पापों का अंत कर देती है, पुण्य उदय कर देती है और यह जीव ईश्वर की तरफ चल
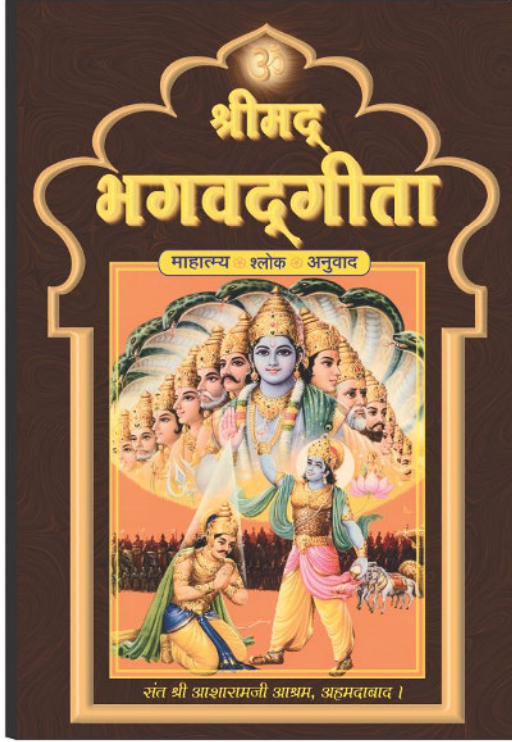
पड़ता है।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण के आगे अपनी व्यथा प्रकट कर दी कि ''युद्ध के लिए तैयार खड़े हुए स्वजनों को मारकर पाया जानेवाला राज्य मुझे नहीं चाहिए। मैं ऐसा पापकर्म नहीं करूँगा। इससे तो अच्छा यह होगा कि मुझ शस्त्ररहित को कौरव रण में मार दें।''

श्रीकृष्ण ने देखा कि 'स्वजनों के मोह के कारण यह ऐसी कायरतापूर्ण बातें कर रहा है।' तब दूसरे अध्याय में उन्होंने अर्जुन को हृदय की दुर्बलता का त्याग करके युद्ध के लिए तैयार हो जाने का उपदेश दिया।

विषादयोग के बाद दूसरा अध्याय आता है :

सांख्ययोग

संसार में रहकर ईंट, चूना, लोहे-लक्कड़ आदि भौतिक पदार्थों का ज्ञान तो हर कोई पा लेता है लेकिन यहाँ भगवान वह ज्ञान पाने को नहीं कह रहे हैं। यहाँ तो वे भगवद्-तत्त्वसंबंधी ज्ञान की बात कर रहे हैं। देह की नश्वरता और आत्मा की अमरता का ज्ञान पाने की बात कर रहे हैं। स्वधर्म का आचरण कैसे किया जाय, यह समझा रहे हैं।

भगवान अर्जुन से कह रहे हैं : ''जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है और आत्मा तो न कभी जन्मता है, न मरता है। फिर शोक किसका करना ? अगर स्वधर्म को नहीं निभायेगा यानी सहज कर्तव्य-कर्म को नहीं करेगा, क्षत्रिय धर्म के अनुसार युद्ध नहीं करेगा तो तेरी अपकीर्ति होगी, जो तेरे लिए मरण से भी बढ़कर दुःखदायी होगी।''

इसलिए हरेक मनुष्य को संस्कार-प्राप्त सहज कर्तव्य-कर्म को करते-करते अमर आत्मा का ज्ञान पा लेना चाहिए। फल की आशा छोड़कर अपने कर्तव्य-कर्म को उत्तम रीति से करनेवाला पुरुष स्थितप्रज्ञ (स्थिर बुद्धिवाला) हो जाता है। वह जन्म-मरणरूपी बंधन से मुक्त हो के परम पद को प्राप्त हो जाता है।

फिर तीसरा अध्याय आता है :

कर्मयोग

कर्म तो सब करते हैं लेकिन वे कर्म करके बंधन बनाते हैं। कोई विरला गुरुमुख कर्म को योग बना लेता है। कर्म के ऐहिक फल का त्याग करके कर्मयोगी अनंत गुना फल पा लेता है। जनकादि ज्ञानीजन भी आसक्तिरहित कर्म द्वारा ही परम सिद्धि को प्राप्त हुए थे। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है : ''मुझ अंतर्यामी परमात्मा में लगे हुए चित्त के द्वारा सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें अर्पण करके आशा, ममता और संताप रहित होकर युद्ध कर।''

कर्म करने की शक्ति ईश्वर ने आपको दी है लेकिन कर्म से कर्मबंधन बढ़ाओ मत, कर्मों के जाल को काटो। तत्परता से कर्म करो, लापरवाही, बेवकूफी, आलस्य, प्रमाद से काम को बिगड़ने न दो। पूरी सावधानी से कर्म करो लेकिन कर्म के फल की और उस फल को अपने लिए भोगने की इच्छा को हटाने की कला सीख लो। इससे आपका कर्म आपके लिए कर्मयोग हो जायेगा। (क्रमशः)

****

(पृष्ठ २९ 'गुरुपूर्णिमों...' का शेष) **हरि ॐ ॐ...**

शांत हो जाओ। जो पढ़ा है, तालू में जीभ लगाकर उसको अपना बनाते जाओ। तुम्हारे शुभ संकल्प और भाव 'बापू बाहर आ जायें' ये काम कर रहे हैं और तुम सफल हो जाओगे।

२१ जुलाई को दिया गया संदेश

गुरु - 'गु' माना अंधकार, 'रु' माना प्रकाश। 'शरीर मैं हूँ और संसार का सुख-दुःख सच्चा है' यह अंधकार है। 'मैं सुख-दुःख को जाननेवाला आत्मा हूँ और संसार सपना है, परमात्मा अपना है'- यह गुरुपूनम का संदेश आपको आत्मानुभव में ले जायेगा। थोड़े दिन का खेल है, सत्य की जय होगी।

१. प्रत्यक्ष

राजकुमार श्यामराव से बने संत तुलसी साहिब

पुणे (महा.) के राजा ने अपने बड़े युवराज श्यामराव का विवाह केवल १२ वर्ष की उम्र में कर दिया। श्यामराव ने इस विवाह का बहुत विरोध किया था। वे बचपन से ही वैरागी थे किंतु पिता और ऊपर से राजा, भला उनका आदेश वे कैसे टालते ! जब वे २०-२२ वर्ष के हो गये, तब भी पति-पत्नी के शारीरिक विकारों से दूर रहे। उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई एक पतिव्रता नारी थी। वह सदैव पति की सेवा में तल्लीन रहती। श्यामराव अपनी पत्नी की सेवा से बहुत प्रसन्न थे। एक दिन उन्होंने पत्नी से कहा : ''तुमने मेरी बहुत सेवा की है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आज तुम मुझसे कुछ माँग लो।''
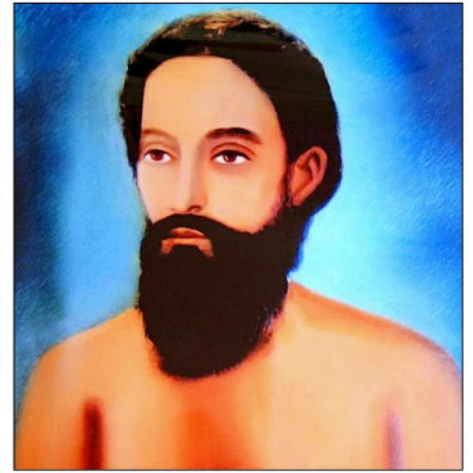
लक्ष्मीबाई शर्मा गयी। उसने सारी बात अपनी सासु को बता दी और कहा : ''भला मैं क्या माँगूँ ? मेरे पास सब कुछ है।''

सासु बोली : ''नहीं, तुम्हारे पास पुत्र नहीं है। अब वही बात फिर से कहे तो तुम उससे एक पुत्र माँग लेना।''

दूसरे दिन श्यामराव ने फिर वही बात दोहरायी तो झुकी हुई आँखों से लक्ष्मीबाई बोली : ''मुझे एक पुत्र दे दीजिये।''

उनको दस महीने बाद एक पुत्र की प्राप्ति हुई। श्यामराव के पिता ने सोचा, 'अब तो पुत्र का मन संसार में रम गया है इसलिए उसे राजगद्दी सौंपकर जंगल में जा के भगवान का भजन किया जाय।' किंतु पुत्र तो पहले ही अंदर से संन्यासी था, वह बोला : ''पिताजी ! आप राजपाट क्यों छोड़ना चाहते हैं ?''

''बेटा ! यह सब एक दिन तो छूट ही जाना है। मैं क्यों न इस मोह-माया से दूर जाकर सत्य की खोज करूँ, जो मानव-जीवन का लक्ष्य है।''

''पिताजी ! जो आपका लक्ष्य है, वही मेरा भी लक्ष्य है। आप अब इस उम्र में राजपाट त्यागना चाहते हैं तो समझिये मैंने इसे त्याग ही दिया। मैं भला क्यों इस झूठी मोह-माया में पड़ूँ, जिससे आप छूटना चाहते हो !''

फिर भी पिता ने आस नहीं छोड़ी, वे बार-बार समझाते रहे और एक दिन श्यामराव को राजगद्दी सौंपने की तिथि की घोषणा कर दी।

राजकुमार को राजा बनाने की तैयारियाँ जोरों से चल रही थीं। उनका राज्याभिषेक होने में केवल एक दिन शेष था। वे अपने कुछ साथी और जीवन-रक्षक घुड़सवारों के साथ शहर से बाहर निकल गये। धीरे-धीरे अपने तेज-तर्रार तुर्की घोड़े को साथियों से भी अलग कर ऐसी टेढ़ी-मेढ़ी राहों से एवं इतने दूर निकल गये कि कोई खोज न पाये। उनकी खोज में अनेक सैनिक दौड़ाये गये किंतु उनका कहीं पता नहीं चला। आखिर निराश हो के राजा ने राजगद्दी अपने छोटे पुत्र बाजीराव को सौंपकर वन-गमन किया।

यद्यपि श्यामराव स्वयं एक उच्च कोटि के साधक थे किंतु फिर भी वे किन्हीं ऐसे महापुरुष की तलाश में थे जिनसे वे गुरुदीक्षा ले सकें। उनको ऐसे ही एक संत मिल गये। उन्होंने उन संत को अपना सब कुछ सौंप दिया और उनकी शरण में चले गये। गुरुआज्ञा से वे ॐकार के ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत जप की साधना में डूब गये। शारीरिक और मानसिक

साधनाएँ कीं और एक दिन शरीर, इन्द्रियों और मन के पार होकर निजात्मा में स्थित हो गये । आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार करने में सफल हो गये । वे श्यामराव से तुलसी साहेब बनकर समाज में विचरण करने लगे । उन्होंने गाँवों-शहरों में बरसों घूम-घूमकर लोगों को सत्य का ज्ञान दिया । हाथरस (उ.प्र.) में उनका छोटा-सा आश्रम है और वे वहीं रह के सत्संग कर लोगों को सन्मार्ग दिखाते रहे ।

एक बार एक साहूकार तुलसी साहेब को किसी तरह प्रसन्न कर अपने घर भोजन कराने ले गया । उसने बहुत सेवा की किंतु सेवा के पीछे उसका स्वार्थ था । उसने उनसे माँगा कि वे कृपा करके उसे पुत्रप्राप्ति का वरदान दे दें । इस पर तुलसी साहेब ने अपना सोंटा उठाया और चलते हुए बोले : ''मैं तो वरदान देना चाहता हूँ कि तुम्हारे यहाँ पुत्र हो तो भी भगवान उसे उठा लें और तुम्हें बिल्कुल कंगाल कर दें । तभी तुम इस संसार की मोह-माया छोड़कर परमात्मा की खोज में निकलोगे, तभी तुम्हें स्थायी आनंद का पता चलेगा ।'' महापुरुषों की अपनी अलमस्ती होती है । सामनेवाले की योग्यता के अनुसार कुछ देना - न देना, जिसमें सामनेवाले का मंगल होता है वही उनके द्वारा होता है ।

तुलसी साहेब का मानना है कि 'समस्त लोगों और समस्त धर्मों का स्वामी एक ही परमात्मा है । उस एक का ही चिंतन करना चाहिए । उस एक ईश्वर को ही जानना चाहिए । छोटे-मोटे देवताओं की पूजा अंततः संसार के आवागमन में ही घुमाती है । हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकलना है । एक ॐकार-तत्त्व को जानकर उसीमें मिल जाना है । यही मोक्ष है ।' इस तरह वे अद्वैत मत के समर्थक थे ।

उन्होंने सन् १८४३ में अपना पंचभूतों का चोला छोड़ा और अखंड चैतन्य में समा गये ।

ढूँढ़ो तो जानें

नीचे दिये गये प्रश्नों के आधार पर वर्ग-पहेली में से उत्तर खोजिये ।

(१) ''बेटा ! तू तो मेरा शिष्य है लेकिन भगवान श्रीकृष्ण तेरे शिष्य बनेंगे ।'' किनके गुरु ने शिष्य की सेवा से प्रसन्न होकर यह आशीर्वाद दिया था ?

(२) किसका प्रेमभाव देखकर भगवान श्रीकृष्ण ने केले के छिलके बड़ी प्रसन्नता से खाये थे ?

(३) वर्ष की चार विशेष रात्रियों में किया गया जागरण एवं साधन-भजन अत्यधिक फलदायी माना जाता है । इनमें से तीन हैं - महाशिवरात्रि, होली व दिवाली । चौथी का नाम बताइये ।

(४) ''तुम बदरीवन में चले जाओ । वन के कंद-मूल, फल खाना, किसी भोग की अपेक्षा न रखकर सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख में सम रहना और मैंने तुम्हें ब्रह्मविद्या की जो शिक्षा दी है उसका एकांत में विचारपूर्वक अनुभव करना ।'' यह आज्ञा भगवान श्रीकृष्ण ने किसे दी थी ?

(५) किस तिथि के चन्द्रमा को देखने से कलंक लगता है और उस दिन चन्द्र-दर्शन से श्रीकृष्ण को भी स्यमंतक मणि की चोरी का कलंक लगा था ?

(६) ''हे जगद्गुरु श्रीकृष्ण ! हमारे जीवन में विपदाएँ आती रहें क्योंकि भोग-वासना तो मोह बढ़ाती है जबकि विपदा में आपकी स्मृति होती है ।'' यह वरदान किसने माँगा था ?

(७) वे कौन थे, जो महर्षि भृगुजी द्वारा (समता जाँचने के निमित्त) छाती पर लात मारे जाने पर भी नाराज नहीं हुए अपितु उनके चरणों को सहलाने लगे ?

झ	मी	भ	त्	सां	दी	प	नि	थ	श	ण	उ
श	ज	ए	च	ई	ख	ज्ञ	ड़	स	न	द्ध	म
ठ	श	न्‍	ह्म	स	थ	भ	द्	क	व	थ	भा
चा	साँ	ह	मा	त्रि	क्षा	वि	मि	जी	अ	श	द्र
र्य	ईं	श	ड़	ष्ट	दा	दु	नि	प	फ	ता	प
ए	ष	बा	पु	म	मी	रा	दा	ओ	इ	ग	द
र	ख	उ	आ	पा	ग	नी	मा	मा	त	पा	शु
ई	ला	द्रो	रु	प	सं	ए	डा	ता	क	गु	क्‍
सं	भ	त	श	ह	ला	फ	बा	र	कुं	पा	ल
ज	ह	ल	प	गा	उ	इ	ग	श	र	ती	च
ल	तु	अ	फ	द्य	इ	पू	रा	इ	र्य	ओ	तु
ल	म	भ	ग	वा	न	वि	ष्णु	झ	र्य	ग	र्थी

'ढूँढ़ो तो जानें' वर्ग-पहेली के उत्तर
(१) सांदीपनि (२) विदुरानी (३) जन्माष्टमी (४) उद्धवजी (५) भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (६) माता कुंती (७) भगवान विष्णु
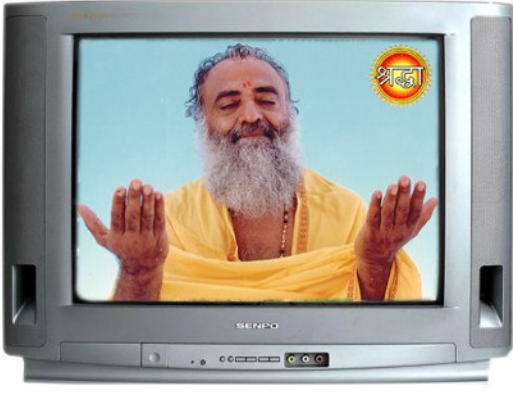
(गतांक से आगे)

(अंक २८१ से आगे)

रामगोपाल वर्मा, प्रस्तोता (होस्ट) : महाराजश्री ! आज समाज में उपद्रवी क्यों बढ़ रहे हैं ? पांडवों की संख्या क्यों कम होती जा रही है ? इसका निदान क्या है ?

पूज्य बापूजी : कारण यही है कि यह कलियुग का प्रभाव है। कलह के युग कलियुग के लिए देवर्षि नारदजी ने कहा है कि

मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः। (श्रीमद्भागवत माहात्म्य : १.३२)

कलियुग ऐसा है कि उसमें मंदमति के उपद्रवी लोग होते हैं और वे मंदमति के लोग जो कुछ अखबारों आदि में लिखा है और जो कुछ मीडिया में आ गया वह सच्चा मान लेते हैं। समझदार लोग बोलते हैं कि 'यह साजिश है' लेकिन नासमझ लोग उत्तेजित हो जाते हैं। अब उसका जिम्मेदार कौन ? अब कितने-कितने लोगों को हम समझायेंगे कि 'भाई ! यह साजिश है।' इसलिए हम तो जो ईमानदार मीडियावाले हैं उनको अपील करते हैं कि सच्चाई लोगों के सामने रखें, जिससे दूध-का-दूध, पानी-का-पानी हो जाय। हमारे लिए और आश्रमों के लिए जो भी कुप्रचार कर रहे हैं उनको भगवान सद्बुद्धि दे। दुर्योधन बढ़ रहे हैं, पांडव कम हो रहे हैं लेकिन ५ पांडवों में से एक भी मरा नहीं और सौ कौरवों में से एक भी बचा नहीं यह भी तो दुनिया जानती है। सत्यमेव जयते। यह भी तो दुनिया जानती है।

यतो धर्मः ततो जयः।

गीता (३.३५) कहती है :

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

अपनी सनातन संस्कृति में मर जाना अच्छा है, परधर्म भयावह है। रामजी के लिए तो एक धोबी ने उँगली उठायी लेकिन आशाराम के लिए कितनी उँगलियाँ एक साथ उठवाने की साजिश चल रही है। कैसी बीतती होगी हम पर ! फिर भी हम कहते हैं :

इल्जाम लगानेवालों ने इल्जाम लगाये लाख मगर।
तेरी सौगात समझकर हम सिर पे उठाये जाते हैं ॥

न जाने कितनी-कितनी सुनियोजित साजिशें ! आश्रम को अलग-अलग ढंग से भयभीत, उत्पीड़ित किया जा रहा है। हमें अपनी पीड़ा नहीं है लेकिन जो बेचारे घर-बार छोड़कर सेवा कर रहे हैं, उनको जब पकड़-पकड़ के ले जाते हैं, उन पर शक करते हैं और गुनहगार की दृष्टि से उनसे व्यवहार किया जाता है तो हमारे हृदय पर क्या गुजरती होगी !

यह तो एक बड़ा षड्यंत्र पूरे हिन्दुस्तान को चुनौती दे रहा है। यह आश्रम आशाराम बापू का व्यक्तिगत नहीं है; इसकी क्षति करके आप हिन्दुस्तान का इतना अहित क्यों चाहते हैं ? विदेशों में हिन्दुस्तान का सिर नीचा क्यों कराना चाहते हैं ? हिन्दुस्तान तो पूरे विश्व का परम हित सोचता है, ऐसे हिन्दुस्तान को बदनाम करनेवाले साजिशकर्ताओ ! आप कहाँ इस कर्म का बदला चुकाओगे ?

(क्रमशः)

मेरा और मेरे साधकों का भगवान वेदव्यासजी व भगवान लीलाशाहजी के चरणों में हृदयपूर्वक अहोभाव व प्रेमपूर्वक दंडवत् प्रणाम, शत-शत प्रणाम !

वास्तविक लोक-मांगल्य के स्वरूप को जाननेवाले ऐसे सभी ब्रह्मवेत्ताओं - ब्रह्मा, विष्णु, महेश, भगवती, गणेश सहित अन्य सभी ब्रह्मवेत्ताओं को प्रणाम-प्रणाम !

सा विद्या या विमुक्तये। वास्तविक विद्या वही है जो सभी बंधनों से छुड़ा दे। जिस लाभ से बड़ा कोई लाभ नहीं - आत्मलाभात् परं लाभं न विद्यते। आत्मज्ञान से बड़ा कोई ज्ञान नहीं - आत्मज्ञानात् परं ज्ञानं न विद्यते। जिस सुख से बड़ा कोई सुख नहीं - आत्मसुखात् परं सुखं न विद्यते। ऐसे ऊँचे लक्ष्य की तरफ ले जानेवाले अभी, इस समय जो विरले कहीं ब्रह्मवेत्ता हैं, उनको भी प्रणाम ! उनके सत्संग-सान्निध्य का लाभ लेनेवाले पुण्यात्माओं को शिवजी सराहते हैं और आशाराम भी :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

आत्मज्ञान के पथिको ! ऐ सद्गुरु के सत्शिष्यो ! 'मैं ऐसा बनूँ, मैं वैसा बनूँ, मैं तैसा बनूँ...' - यह निगुरे लोगों की सोच है। बने तो अहंकार में फूलते हैं, नहीं बने तो विषाद, शोक में डूबते हैं। तुम हर्ष को सच्चा मत मानो, शोक को सच्चा मत मानो। संसारी सफलता को भी सत्य न मानो, विफलता को भी सत्य न मानो। व्यवहार में निगुरे लोगों की मान्यतानुसार व्यवहार कर लो लेकिन भीतर से... जो हर समय साक्षी आत्मा-परमात्मा ज्यों-का-त्यों है - 'मैं' का उद्गम-स्थान - उसीका श्रवण, मनन, निदिध्यासन करो। उसीमें अपने मिथ्या 'मैं' की उथल-पुथल, क्रिया-कलाप मायावी संसार में हो-हो के मिटते रहते हैं।

बीते हुए का शोक ज्ञानवान को नहीं होता, भविष्य का भय उनको नहीं सताता और वर्तमान के व्यक्ति-वस्तु-परिस्थिति में सत्बुद्धि नहीं होती। जन्मा है सो मरेगा, मिला है सो बिछुड़ेगा। कोई भी परिस्थिति आयी है तो जायेगी। सत्बुद्धि करके उसमें उलझता नहीं - ऐसा वह पूरण पुरुष नारायणस्वरूप कहा है वसिष्ठजी ने। गुरुवाणी में आता है :

ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ।
ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर।

संत कबीरजी ने कहा :

निराकार निज रूप है प्रेम प्रीति सों सेव।
जो चाहे आकार को साधू परतछ१ देव ॥

ऐसे ब्रह्मवेत्ता भगवान वेदव्यास, भगवान लीलाशाहजी... ऐसे और भी ब्रह्मवेत्ता जो भगवत्स्वरूप में जगे हैं, उनका, मेरा और सभी महापुरुषों का संदेश समझ लो, मान लो। अपने भगवत्स्वरूप को पाने में सजग रहना है, और क्या !

(शेष पृष्ठ २५ पर)

जघन्य अपराध से सावधान करते संत-शास्त्र

(गतांक का शेष)

गुरु निंदक को कोय न राखे,
सुर नर मुनि हरि सब तिहँ नाखे[1] ।
गुरु निंदक नित जहँ तहँ भटके,
अर्ध उर्ध[2] माहीं सो लटके ।
गुरु निंदक गृह पित्र न जेवहिं,
देव हरी तिहँ भोग न लेवहिं ।
गुरु निंदक को जमगण कूटे,
कितना कूके तौ ना छूटे ।
गुरु निंदक का मिटहिं न दोषा,
कह टेऊँ तिहँ होय न मोषा[3] ।।६।।
गुरु निंदक से प्रीति न करिये,
स्वप्ने में भी तासें डरिये ।
गुरु निंदक के संग न डोलो,
होय मेल तांसे नहिं बोलो ।
गुरु निंदक का मुख ना देखो,
दृष्टि पड़े लख पाप विशेखो[4] ।
गुरु निंदक के बैठ न साथा,
जो बैठो तो सुनहुँ न गाथा ।
गुरु निंदक का नाम न लीजे,
कह टेऊँ तिहँ नाहिं पतीजे[5] ।।७।।
निंदक का भी हो निस्तारा[6],
निंदा तज ले गुरु आधारा ।
गुरु चरनों में श्रद्धा धारे,
सेव करे निज मान निवारे ।
सत्गुरु दाता दीन दयाला,
अवगुन बख्शे करत निहाला ।
करुणा कर तिहँ संग में राखे,
शरणागत को नहिं गुरु नाखे ।
सत्गुरु सम को जग में नाहीं,
कह टेऊँ मैं बलि बलि ताहीं ।।८।।
सत्गुरु जैसा और न दाता,
दीन बंधु है दीन त्राता ।
ऋद्धि सिद्धि नव निधि गुरु की चेरी,
कमती[7] नहिं किस वस्तू केरी[8] ।
सत्गुरु है सुखदायक स्वामी,
सब विधि समर्थ अंतर्यामी ।
अपने जन की रक्षा करता,
काम क्रोध मद शत्रु हरता ।
दुख मेटे देवे सुख वासा,
कह टेऊँ कर पूरी आसा ।।९।।
सत्गुरु में जो धर विश्वासा,
कारज तांके होवे रासा[9] ।
बिन विश्वास सरे नहिं काजा,
बिन जल ज्यों ना चले जहाजा ।
श्रद्धा से सब साधन फूले,
जल सिंचे ज्यों तरुवर झूले ।
श्रद्धा बिन फल दे नहिं कोई,
भावें[10] देव गुरू हरि होई ।
ताँते धर विश्वास प्यारा,
कह टेऊँ गुरु तारन हारा ।।१०।।

- संत टेऊँरामजी

१. त्यागें २. माताओं के गर्भों में ३. मोक्ष ४. विशेष, अधिक ५. भरोसा न करें ६. उद्धार ७. कमी ८. की ९. अनुकूल १०. चाह

सनातन हिन्दू धर्म के रक्षक होनेसे आशारामजी बापू निशाने पर

गुजरात के आतंकवाद निरोधी दस्ते (ATS) के पूर्व प्रमुख श्री डी.जी. वंजारा ने कहा कि ''आशारामजी बापू पर जो भी आरोप लगे हैं और जो भी मामले दर्ज किये गये हैं, वे झूठे हैं। मैंने उनके खिलाफ की गयी एफआईआर पढ़ी है। एक भूतपूर्व पुलिस अधिकारी होने के नाते मैं कानून जानता हूँ।
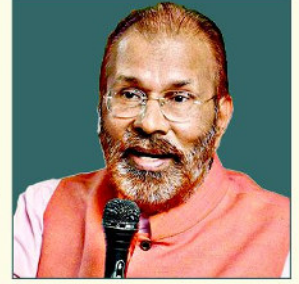
हिन्दू-विरोधी शक्तियाँ उनके पीछे पड़ गयी हैं और उन्हें जेल में भेजा हुआ है। सनातन हिन्दू धर्म के रक्षक होने के कारण संत आशारामजी बापू को निशाना बनाया गया है।'' पूर्व आईपीएस अधिकारी श्री वंजाराजी ने यह बात 'गुजरात अस्मिता मंच' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कही।

उन्होंने एक न्यूज चैनल पर दिये इंटरव्यू में कहा कि ''न्यायपालिका का ही सिद्धांत है कि 'Bail is the rule and jail is the exception' (जमानत नियम है और जेल अपवाद) तो आशारामजी बापू को जमानत मिलनी चाहिए।''
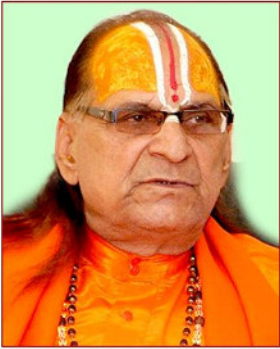
जो ५० वर्षों में किया वह ५०० वर्षों में भी असम्भव

दि. : २-७-१६

प्रिय महोदय तथा

समस्त भारतवासियो !

मेरा पूर्ण विश्वास है कि पूज्य बापूजी सर्वथा निर्दोष हैं। सारे तथ्यों का गहन अवलोकन करने के बाद मैंने पाया कि लड़की द्वारा लगाया गया आरोप स्पष्ट रूप से झूठा एवं साजिशयुक्त है। बापूजी को फँसाने के लिए यह ईसाई मिशनरियों का भयंकर कुचक्र है। धर्मांतरण में उनके लिए बापूजी सबसे बड़े रोड़ा थे। मीडिया भी इसमें बढ़-चढ़कर भ्रम फैला रहा है।

जिनका जीवन ही अंधकारमय बन गया था ऐसे लोगों को बापूजी ने कुमार्ग से निकालकर ईश्वर के मार्ग पर लगा दिया है। जिन्होंने करोड़ों लोगों को संयम की शिक्षा देकर उन्नत किया हो वे ऐसा कार्य कर ही नहीं सकते। बापूजी को पूरी तरह से सुनियोजित षड्यंत्र के तहत फँसाया गया है। सारे कष्टों को ज्ञानदृष्टि के साथ स्वीकार करते जाना पूज्य बापूजी के संतत्व को उजागर करता है।

पूज्य बापूजी ने ५० वर्षों में जो भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है, संस्कृति एवं समाज की सेवा की है, वह दूसरों के लिए ५०० वर्षों में भी करना कठिन ही नहीं, असम्भव है। बापूजी ने तो सभी समाजों का भला चाहा है। उन्हें अब जेल से बाहर आना ही होगा। मैं परम पिता परमात्मा से उनके शीघ्र ही बाहर आने की प्रार्थना करता हूँ।

- स्वामी विदेह

(जगद्गुरु स्वामी विदेह महाराज, अंतर्राष्ट्रीय श्रीमद्भागवत कथा एवं श्रीरामकथा प्रवक्ता)

सफलता का राज बापूजी का सत्संग व मंत्रदीक्षा

मेरा बेटा अश्विन लंदन (यू.के.) में सीनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत है । उसके नीचे ७५ लोग काम करते हैं और उसे वहाँ हर माह २८ हजार २३३ पौंड (भारत के करीब २५ लाख रुपये, वार्षिक लगभग ३ करोड़ रुपये) सैलरी मिलती है।

जब वह छोटा था तभी उसने पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ले ली थी । उसके प्रभाव से उसकी बुद्धिशक्ति में गजब का लाभ हुआ, उसकी उत्तरोत्तर उन्नति होती गयी । अश्विन को बचपन से ही 'मोटर बाइक रेस' में भाग लेने की इच्छा थी । बापूजी की कृपा से उसने २००९ में राष्ट्रस्तरीय 'इम्पोर्टेड मोटर बाइक रेस' में ३ बार प्रथम स्थान प्राप्त किया । इस प्रतियोगिता में उसे ३३,००० रुपये की राशि से भी सम्मानित किया गया, जिसे उसने सेवाकार्यों में लगा दिया ।

अश्विन हमेशा अपने गले में बापूजी का लॉकेट पहने रहता है । एक दिन मुंबई में बाइक रेस के दौरान मोटर साइकिल से उसका ऐसा भयंकर एक्सीडेंट हुआ कि वह २४ घंटे तक कोमा में रहा । उसमें उसके साथी की तो मृत्यु हो गयी परंतु गुरुकृपा से अश्विन बच गया । वह आज लंदन में रहकर भी पूज्य बापूजी द्वारा दिया गया साधना का नियम नित्य करता है । मेरा पूरा परिवार बापूजी से दीक्षित है ।

मेरी व मेरे परिवार की खुशियाँ एवं अश्विन की सभी सफलताएँ पूज्य बापूजी के सत्संग, उनसे प्राप्त मंत्रदीक्षा और उनके आशीर्वाद की ही बदौलत हैं ।

– डॉ. विश्वनाथ चिमकोड
शास्त्री नगर, गुलबर्गा (कर्नाटक)
सचल दूरभाष : ०९८८६४४६९४२

गुरुमंत्र के जप से मिटा कैंसर

जनवरी २००८ की बात है । मेरे पेट में भयंकर दर्द होने लगा । एक-दो नहीं सात-सात डॉक्टरों को दिखाया, कई बार सोनोग्राफी करवायी । सभीने कहा कि ''बच्चेदानी में ट्यूमर (कैंसर) है।'' बहुत इलाज कराया, दवा खाते-खाते थक गयी पर कोई राहत न मिली ।

तभी जून २००९ में पूज्य बापूजी वाराणसी में सत्संग हेतु पधारे थे । मैंने सत्संग सुना और मुझे दीक्षा लेने का सौभाग्य मिला । सत्संग-पंडाल में बैठे-बैठे ही मैंने पूज्य गुरुदेव के सामने करुणभाव से प्रार्थना की : 'हे गुरुदेव ! अब आप ही मेरी इस भयंकर पीड़ा का निदान कीजिये ।' घर आकर मैंने संकल्प लिया और रोग-निवारण के लिए गुरुमंत्र का जप करना शुरू कर दिया । सारी दवाइयाँ बंद कर दीं । पूज्य बापूजी की ऐसी कृपा हुई कि मात्र दो महीने में ही मेरा ट्यूमर ठीक हो गया । आज मैं बापूजी की कृपा से पूर्ण स्वस्थ हूँ ।

मैंने बापूजी को अपनी पीड़ा सामने जाकर नहीं बतायी थी, केवल पूज्यश्री के द्वारा दिये गये गुरुमंत्र का जप करने से मेरा इतना भारी कष्ट दूर हो गया । ऐसे समर्थ, परमात्मस्वरूप, अंतर्यामी गुरुदेव के श्रीचरणों में अनंत-अनंत नमन !

– पूनम दीक्षित, वाराणसी (उ.प्र.)
सचल दूरभाष : ०९८३९३३०४२३

एक्यूप्रेशर द्वारा हृदयरोग का इलाज

रोग-निवारण के लिए प्रतिबिम्ब केन्द्र
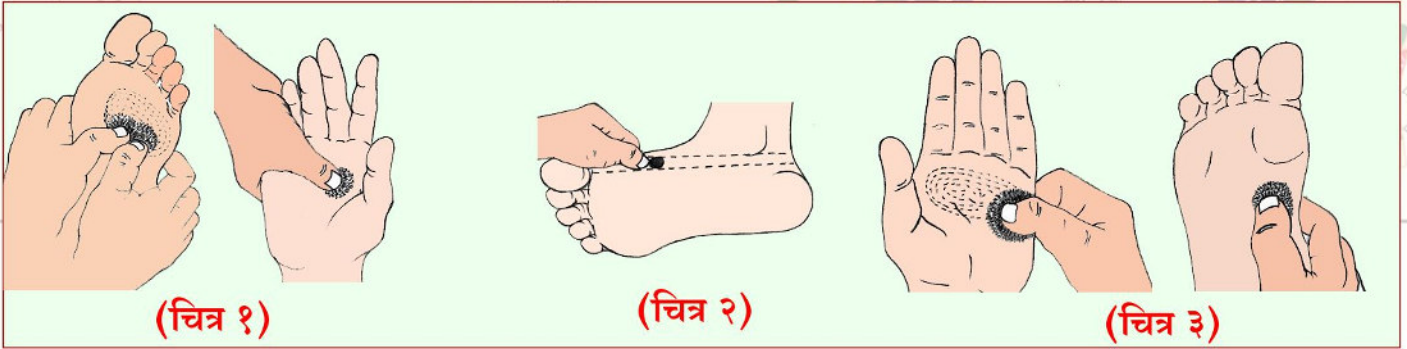
(चित्र १) (चित्र २) (चित्र ३)

(१) हृदय से संबंधित प्रतिबिम्ब केन्द्र बायें तलवे तथा बायीं हथेली में उँगलियों से थोड़ा नीचे होते हैं। जहाँ दबाने से अपेक्षाकृत अधिक दर्द हो अर्थात् काँटे जैसी चुभन हो, उन केन्द्रों पर विशेष रूप से दबाव दें। (देखें चित्र १)

(२) हृदयरोगों के निवारण के लिए स्नायु संस्थान, गुर्दों तथा फेफड़ों का स्वस्थ होना बहुत जरूरी है। अतः इनसे संबंधित प्रतिबिम्ब केन्द्रों पर भी दबाव देना चाहिए। (देखें चित्र २ तथा ३)

हृदयरोगों के निवारण तथा हृदय को सशक्त बनाने के लिए अंतःस्रावी ग्रंथियों (पिट्यूटरी, पीनियल, थायरॉइड आदि) की कार्यप्रणाली को अधिक प्रबल बनाने की आवश्यकता होती है। अतः इनसे संबंधित प्रतिबिम्ब केन्द्रों पर भी दबाव देना चाहिए।

वर्तमान समय में अनियमित दिनचर्या, अप्राकृतिक खान-पान, व्यायाम तथा शारीरिक परिश्रम न करना, दवाइयों का अधिक सेवन करना, अपर्याप्त निद्रा, मानसिक तनाव, चिंता, ईर्ष्या, नशा करना आदि कारणों से हृदयरोग बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं।

अतः उपरोक्त कारणों से बचें तथा पूज्य बापूजी द्वारा बतायी गयी जैविक घड़ी पर आधारित दिनचर्या (पढ़ें ऋषि प्रसाद, सितम्बर २०१५, पृष्ठ ३२) के अनुसार अपना आहार-विहार रखें। सत्शास्त्रों व ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के सत्संग के पठन, श्रवण तथा चिंतन से तनाव, मानसिक अवसाद, चिंता, अशांति आदि दूर होते हैं, विचार सकारात्मक होते हैं तथा हृदय को आह्लादित, आनंदित और निरोग रखनेवाले द्रव्य पैदा होते हैं। इनका रोगी-निरोगी सभी लाभ ले सकते हैं

शुभकामना पत्र

दि. : २१-०७-२०१६

प्रसन्नता का विषय है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की रजत जयंती मनायी जा रही है। अध्यात्म एवं जीवन-मूल्य निज जीवन के साथ-साथ समाज व देश के लिए कितने महत्त्वपूर्ण हैं, इसका संदेश यह पत्रिका देश-विदेश में निरंतर पहुँचा रही है।

रजत जयंती के अवसर पर पत्रिका के कार्यकर्ता-समूह को मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा पत्रिका के अपने प्रयोजन में निरंतर सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित...

डॉ. हर्षवर्धन, मंत्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान, भारत सरकार

तेलों में सर्वश्रेष्ठ बहुगुणसम्पन्न तिल का तेल

तेलों में तिल का तेल सर्वश्रेष्ठ है। यह विशेषरूप से वातनाशक होने के साथ ही बलकारक, त्वचा, केश व नेत्रों के लिए हितकारी, वर्ण (त्वचा का रंग) को निखारनेवाला, बुद्धि एवं स्मृतिवर्धक, गर्भाशय को शुद्ध करनेवाला और जठराग्निवर्धक है। वात और कफ को शांत करने में तिल का तेल श्रेष्ठ है।

अपनी स्निग्धता, तरलता और उष्णता के कारण शरीर के सूक्ष्म स्रोतों में प्रवेश कर यह दोषों को जड़ से उखाड़ने तथा शरीर के सभी अवयवों को दृढ़ व मुलायम रखने का कार्य करता है। टूटी हुई हड्डियों व स्नायुओं को जोड़ने में मदद करता है।

तिल के तेल की मालिश करने व उसका पान करने से अति स्थूल (मोटे) व्यक्तियों का वजन घटने लगता है व कृश (पतले) व्यक्तियों का वजन बढ़ने लगता है। तेल खाने की अपेक्षा मालिश करने से ८ गुना अधिक लाभ करता है। मालिश से थकावट दूर होती है, शरीर हलका होता है। मजबूती व स्फूर्ति आती है। त्वचा का रूखापन दूर होता है, त्वचा में झुर्रियाँ तथा अकाल वार्धक्य नहीं आता। रक्तविकार, कमरदर्द, अंगमर्द (शरीर का टूटना) व वात-व्याधियाँ दूर रहती हैं। शिशिर ऋतु में मालिश विशेष लाभदायी है।

औषधीय प्रयोग

* तिल का तेल १०-१५ मिनट तक मुँह में रखकर कुल्ला करने से शरीर पुष्ट होता है, होंठ नहीं फटते, कंठ नहीं सूखता, आवाज सुरीली होती है, जबड़ा व हिलते दाँत मजबूत बनते हैं और पायरिया दूर होता है।
* ५० ग्राम तिल के तेल में १ चम्मच पीसी हुई सोंठ और मटर के दाने बराबर हींग डालकर गर्म किये हुए तेल की मालिश करने से कमर का दर्द, जोड़ों का दर्द, अंगों की जकड़न, लकवा आदि वायु के रोगों में फायदा होता है।
* २०-२५ लहसुन की कलियाँ २५० ग्राम तिल के तेल में डालकर उबालें। इस तेल की बूँदें कान में डालने से कान का दर्द दूर होता है।
* प्रतिदिन सिर में काले तिलों के शुद्ध तेल से मालिश करने से बाल सदैव मुलायम, काले और घने रहते हैं, बाल असमय सफेद नहीं होते।
* ५० मि.ली. तिल के तेल में ५० मि.ली. अदरक का रस मिला के इतना उबालें कि सिर्फ तेल रह जाय। इस तेल से मालिश करने से वायुजन्य जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है।
* तिल के तेल में सेंधा नमक मिलाकर कुल्ले करने से दाँतों के हिलने में लाभ होता है।
* घाव आदि पर तिल का तेल लगाने से वे जल्दी भर जाते हैं।

स्वरयोग विज्ञान महत्ता व उपयोग

यदि हम श्वासोच्छ्वास का अवलोकन करें तो पायेंगे कि सामान्यतया एक समयावधि में एक ही नथुने से वायु (अधिक मात्रा में) आती-जाती है। फिर उसके बाद दूसरा नथुना खुलता है तथा श्वास का प्रवाह उससे चलता है।

एक स्वर बायें से तो दूसरा दायें से प्रवाहित होता है तथा तीसरा एक साथ दोनों नथुनों से प्रवाहित होता है, जिसे ध्यान-भजन व ईश्वरीय सुख दिलाने में परम हितकारी 'शून्य स्वर' कहते हैं। इस समूची क्रिया में एक क्रम और नियमबद्धता पायी जाती है। ये तीनों स्वर हमारे शरीर, मन और मस्तिष्क पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डालते तथा ऊर्जा-केन्द्रों में हलचल पैदा करते हैं। श्वासोच्छ्वास की यह लय हमारे शरीर के समस्त शारीरिक तथा मानसिक क्रियाकलापों को नियमित, नियंत्रित एवं चुस्त-दुरुस्त रखती है तथा सम्पूर्ण नाड़ीमंडल को प्रभावित करती है।

यदि स्वर नियमित न हो तो यह इस बात की चेतावनी है कि शरीर में कहीं-न-कहीं कोई गड़बड़ी आ गयी है। स्वरयोग एक अत्यंत प्राचीन विज्ञान है, जो बताता है कि श्वास द्वारा किस प्रकार प्राण को नियंत्रित तथा संचालित किया जा सकता है।

जिस समय श्वासोच्छ्वास का प्रवाह बायीं नासिका (इड़ा नाड़ी) में होता है उस समय चित्त क्रियाशील होता है तथा प्राण अपेक्षाकृत कमजोर अवस्था में होते हैं। जिस समय दायें नथुने (पिंगला नाड़ी) से श्वासोच्छ्वास प्रवाहित होता है उस समय प्राण शक्तिशाली होते हैं तथा मनस् शक्ति (चित्त की क्रियाशीलता) मंद होती है। परंतु जब श्वास का प्रवाह एक साथ दोनों नथुनों में समान (सुषुम्ना नाड़ी सक्रिय) हो तो वह इस बात का संकेत है कि व्यक्ति का आत्मपक्ष (आत्मशक्ति, आत्मिक जागृति की अवस्था) प्रबल है।

सुषुम्ना का अपना आध्यात्मिक महत्त्व है। जब सुषुम्ना प्रवाहित होती है तो शारीरिक और मानसिक ऊर्जा लययुक्त तथा समान होती है। विचारों तथा मन की हलचल न्यूनतम होती है। मन शांत और एकाग्र रहता है। सुषुम्ना सफल ध्यान के लिए बड़ा सहायक स्वर माना जाता है, स्वरयोग का सार शून्य स्वर (सुषुम्ना नाड़ी) को दीर्घकाल तक सक्रिय रखना तथा इड़ा-पिंगला के क्रियाकलापों को कम करना है। (क्रमशः)

न्यूजर्सी के विद्यालयों की छुट्टियों में शामिल हुए १९ भारतीय त्यौहार

हाल ही में अमेरिका के 'न्यूजर्सी स्टेट बोर्ड ऑफ एजूकेशन' (NJSBE) द्वारा १९ भारतीय त्यौहारों - गुरुपूर्णिमा, नाग पंचमी, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली, गोवर्धन पूजा, मकर संक्रांति, वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, श्रीराम नवमी, हनुमान जयंती आदि को छुट्टियों की सूची में शामिल किया गया है।

वैदिक रक्षासूत्र का लाभ लें

(रक्षाबंधन : १८ अगस्त)

रक्षासूत्र यदि वैदिक रीति से बना हो तथा वैदिक मंत्रोच्चारण व भगवद्भाव सहित शुभ संकल्प करके बाँधा जाय तो इसका सामर्थ्य असीम हो जाता है ।

प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी महिला उत्थान मंडल द्वारा वैदिक राखियाँ बनायी गयी हैं ।

वैदिक राखियाँ आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं ।

रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०/८२७

ई-मेल ...

mum.prachar@gmail.com

पुकार से मिली विजय और मनौती से मिले नौ लाख

मेरे पति की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गयी । हमने ट्रकवाले पर केस कर दिया । ट्रक का बीमा था । बीमा कम्पनी ने अपना बचाव करते हुए कहा कि 'केस फर्जी (झूठा) है ।'

मेरे पिताजी ने मुझसे कहा : ''बेटी ! अब तू पूज्य बापूजी से प्रार्थना कर । वे ही कुछ कर सकते हैं । वे गरीबों के सहारे हैं और दुःखियों की पुकार सुनते हैं ।'' मैंने बापूजी से श्रद्धापूर्ण व सच्चे मन से प्रार्थना की और मनौती मानी कि 'मेरा यह काम हो जाय तो मैं १२५ लोगों को 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनाऊँगी ।' दूसरे ही दिन बीमा कम्पनीवाले घर आये और ४ लाख रुपयों के चेक के बदले ९ लाख का चेक देकर गये । परम कृपालु गुरुदेव को कोटिशः प्रणाम !

- कोकिला बेन गोहिल
ग्राम वटामण, जि. अहमदाबाद
सचल दूरभाष : ०७६९८४२६००२

नीति वचन

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनःपुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

'अधम श्रेणी के लोग विघ्न के भय से कोई कार्य प्रारम्भ नहीं करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य प्रारम्भ कर देते हैं परंतु विघ्न उपस्थित हो जाने पर उसे छोड़ देते हैं, उत्तम श्रेणी के लोग कार्य प्रारम्भ करने के बाद विघ्नों से बराबर सताये जाने पर भी कार्य को बीच में ही नहीं छोड़ते, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं ।' (नीति शतक : २७)

न स्यात् स्वधर्महानिस्तु यया वृत्त्या च सा वरा ।

'जिस वृत्ति (आजीविका) से अपने धर्म की हानि न हो वही वृत्ति उत्तम है ।'

(शुक्रनीति सार : ३.२७१)

श्रीकृष्ण के जीवन में आध्यात्मिक उन्नति व वैदिक ज्ञान ऐसा था कि नास्तिक लोग भी उनको योगिराज, नीतिज्ञशिरोमणि, उच्च दार्शनिक मानते थे । मुसलमानों में भी रसखान, ताज बेगम, रेहाना तैय्यब और रहीम खानखाना आदि लोगों ने श्रीकृष्ण की भक्ति और प्रशंसा करके अपना जीवन धन्य किया । - पूज्य बापूजी

गुरुपूर्णिमा पर दिखी साधकों की अटूट श्रद्धा-भक्ति मनायी गयी 'ऋषि प्रसाद रजत जयंती'

देश-विदेश के सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों में अत्यंत श्रद्धा-भक्ति के साथ गुरुपूर्णिमा का पवित्र पर्व मनाया गया। साधकों ने गुरुदेव का मानस-पूजन, पादुका-पूजन, जप, सत्संग-श्रवण, श्री आशारामायणजी का पाठ आदि कार्यक्रमों के माध्यम से गुरुपूर्णिमा के पर्व का लाभ लिया। इस अवसर पर पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई हेतु जप व संकल्प भी किया गया। ऋषि प्रसाद रजत जयंती पर विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए एवं समाजसेवी पुण्यात्माओं द्वारा ऋषि प्रसाद को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया गया।

इस दिन जोधपुर कारागृह-परिसर के इर्दगिर्द साधकों का हुजूम उमड़ पड़ा। साधकों ने कारागृह के निकट पहुँचकर पूज्य बापूजी के श्रीविग्रह की आरती की, फूलमालाएँ अर्पण करके गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

जोधपुर आश्रम में गरीबों व पाकिस्तान से आये हिन्दू शरणार्थियों में आटा, चावल, तेल, मिठाई के डिब्बे, नमकीन, बड़ी मच्छरदानियाँ, कपड़े, चप्पल आदि विभिन्न जीवनोपयोगी सामग्रियों व नकद राशि का वितरण किया गया और उन्हें भोजन कराया गया।

अहमदाबाद आश्रम में भी गुरुपूर्णिमा का पर्व मनाने बड़ी संख्या में साधक पहुँचे थे। यहाँ 'ऋषि प्रसाद रजत जयंती' पर विशेष कार्यक्रम हुआ, जिसमें ऋषि प्रसाद को घर-घर पहुँचाने की सेवा करनेवाले परोपकारी पुण्यात्माओं ने अपने-अपने अनुभवों के द्वारा बताया कि किस प्रकार इस सेवा द्वारा उनके और पाठकों के जीवन में खुशहाली आयी है।

गुरुपूर्णिमा के निमित्त देश के सैकड़ों स्थानों पर संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं। अनेकानेक स्थानों पर गरीबों में भंडारे किये गये व उनमें जीवनोपयोगी सामग्री वितरित की गयी।

गत माह हुए कुछ सेवाकार्यों पर एक नजर

जीवनोपयोगी सामग्री-वितरण व भंडारे : उमरखड़ी जि. तापी, जामनगर, महलगाँव जि. डांग (गुज.), सरभोका जि. कोरिया (छ.ग.), हाथरस (उ.प्र.), अमरावती (महा.), जम्मू, हैदराबाद आदि में गरीबों में कपड़े, अनाज, छाते एवं अन्य जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण किया गया। कोटा-रायपुर (छ.ग.) में 'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' योजना के तहत छाते भी वितरित किये गये।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर : कोरबा (छ.ग.) में निःशुल्क दंत चिकित्सा शिविर तथा नासिक जिले के सारोले (खुर्द), मालेगाँव, पाडली, शेनवड, वाघेरे, गरुड़ेश्वर में निःशुल्क होमियोपैथिक चिकित्सा शिविरों का

आयोजन किया गया।

नोटबुक-वितरण : मढ़ी जि. सूरत, कड़माल, हांडोल, आहवा जि. डांग, बोटाद, भावनगर (गुज.), मोतिहारी (बिहार), पंचेड़, धामनोद व विद्याखेड़ी जि. रतलाम (म.प्र.), खड़गपुर (प. बंगाल), पुणे (महा.), कलबुर्गी (कर्नाटक), पंचकुला (हरि.), भुवनेश्वर आदि स्थानों पर विद्यालयों में प्रेरक संदेशों व सफलता की कुंजियों से युक्त आश्रमनिर्मित नोटबुकों का वितरण किया गया।

पर्यावरण सुरक्षा अभियान : पठानकोट, हैदराबाद के तोंडुपल्ली, पेद्दशापुर, पाल्माकुल आदि में विद्यालयों में तुलसी, पीपल, आँवला, नीम, बरगद आदि के पौधे लगाये गये।

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२५ अगस्त : जन्माष्टमी (भारतवर्ष में रहनेवाला जो प्राणी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करता है, वह सौ जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है। - ब्रह्मवैवर्त पुराण)

२८ अगस्त : अजा एकादशी (यह व्रत सब पापों का नाश करनेवाला है । इसका माहात्म्य पढ़ने व सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।)

५ सितम्बर : गणेश-कलंक चतुर्थी, चन्द्रदर्शन निषिद्ध (चन्द्रास्त : रात्रि ९-३३)

('ॐ गं गणपतये नमः' मंत्र का जप करने और गुड़मिश्रित जल से गणेशजी को स्नान कराने एवं दूर्वा व सिंदूर की आहुति देने से विघ्न-निवारण होता है तथा मेधाशक्ति बढ़ती है।)

१३ सितम्बर : पद्मा एकादशी (व्रत करने व माहात्म्य पढ़ने-सुनने से सर्व पापों का नाश।)

१६ सितम्बर : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-१३ से शाम ६-३७ तक) (इस दिन किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल ८६,००० गुना होता है। - पद्म पुराण)

२० सितम्बर : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) जब मन के साथ हम जुड़ते हैं तो क्या सत्य भासते हैं ?

(२) कैसा आदमी सही निर्णय नहीं ले सकता ?

(३) तेल खाने की अपेक्षा मालिश करने से कितने गुना अधिक लाभ करता है ?

(४) जब एक साथ दोनों नथुनों से वायु आती-जाती है तो उसे क्या कहते हैं ?

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) उत्तर या पूर्व दिशा (२) अहंकार, चिंता और व्यर्थ का चिंतन (३) नमस्कार (४) पित्तदोष (५) कंगाल

(पृष्ठ ५ से ' बापूजी ने जीने...' का शेष)

संध्या-उपासना का इतिहास

ऋषि-मुनि त्रिकाल संध्या करते थे । भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण और भगवान राम के गुरुदेव वसिष्ठजी भी संध्या करते थे । ब्रह्मज्ञान का ऊँचा सत्संग चल रहा होता, उस ऊँचे सत्संग में से भी समय निकालकर वसिष्ठजी बोलते हैं कि 'रामजी ! संध्या का समय हो गया है ।' और अभी भी संत-महापुरुष संध्या करते हैं, जैसे लालजी महाराज थे या हमारे गुरुदेव भी सुबह, दोपहर संध्या करते और हमारे आश्रमों में भी त्रिकाल संध्या होती है । संध्या आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य में भी मदद करती है। (क्रमशः)

गुरुपूर्णिमा पर संकीर्तन यात्राएँ निकालकर जन-जन तक पहुँचाया गुरु-संदेश

विद्यार्थियों में सद्गुणों एवं सुसंस्कारों का विकास करनेवाली नोटबुकों का वितरण

गुरुपूर्णिमा पर जपमाला-पूजन एवं साधना में उन्नति का संकल्प करते साधकवृंद

'युवा सेवा संघ' द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर हुए तेजस्वी युवा शिविरों की कुछ झलकें

स्थान
अहमदाबाद आश्रम

युवा सेवा संघ द्वारा

राष्ट्रस्तरीय 'तेजस्वी युवा शिविर'

दिनांक
१० से १२ सितम्बर

१६ से ४५ वर्ष तक के केवल भाई शिविर में पंजीकरण करा सकते हैं।

सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७६१/८८ ऑनलाइन पंजीकरण हेतु : https://goo.gl/QsVwre

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
Posting at Dehradun G.P.O.
between 4th to 20th of every month.
Date of Publication: 1st August 2016

जोधपुर में गुरुपूर्णिमा पर उमड़ा भक्तों का सैलाब, हुए कई कार्यक्रम

गुरुपूर्णिमा पर देशभर में हुए भंडारों की कुछ झलकें

ऋषि प्रसाद रजत जयंती के निमित्त हुए विविध कार्यक्रम